विक्रम बालवार्ता

भाग-3

संकलन

पूज्य उपाध्याय श्री विश्रुतयश विजयजी म. सा.

अनंत लब्धिनिधान
श्री गौतमस्वामी भगवान

जैन व्याख्यान वाचस्पति कविकुलकिरीट
पूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय
लब्धिसूरीश्वरजी म. सा.

नित्यभक्तामर स्तोत्र समाराधक
तीर्थप्रभावक पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय
विक्रमसूरीश्वरजी म. सा.

श्री पार्श्वनाथ-पद्मावती समाराधक, गीतार्थ गच्छाधिपति पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **राजयशसूरीश्वरजी म. सा.**

विद्वानवक्ता-ज्योतिषज्ञ पूज्य आचार्यदेव
श्री रत्नयशसूरीश्वरजी म. सा.

विद्वान साहित्यकार पूज्य उपाध्याय
श्री विश्रुतयश विजयजी म. सा.

युवा प्रवचनकार पूज्य आचार्यदेव
श्री वीतरागयशसूरीश्वरजी म. सा.

विक्रम
बाल वार्ता
भाग–3
संकलन
पूज्य उपाध्याय
श्री विश्रुतयश विजयजी. म. सा.

पूज्य आचार्यश्री राजयशसूरीश्वरजी म.सा. संपादित पुस्तकें

E-Books Link

Book Name	Link
Sukt Ratnavali (511 Quotes - Sanskrit, Gujarati, English)	https://archive.org/details/SuktRatnavali
Jain Dharma ni Ruprekha (Guj.)	https://archive.org/details/jain-dharmani-ruprekha
Outline of Jainism (English, French, Kannad)	https://archive.org/details/outline-of-jainism-Eng-Kannad
Biographies of 5 Glorious Jain Acharyas	https://archive.org/details/biographies-of-5-glorious-jain-acharya
Updeshmala Karnika Granth	https://archive.org/details/updeshmala-karnika-granth
Ahimsa Hee Amrutam (Regional 10 Indian Languages including English)	https://archive.org/details/ahimsaheeamrutam
Labdhi Bal Varta (1 to 12 Parts - 612 Stories)	https://archive.org/details/Labdhi-Bal-Varta
Vikram Bal Varta (Part 1-2-3) (Hindi-English)	https://archive.org/details/vikram-bal-varta
Panch Pratikraman Sutra (Gujarati, Hindi, English)	https://archive.org/details/panch-pratikraman-sutra-guj-hin-eng_202011
Jindarshan Pujan Vidhi (Hindi)	https://archive.org/details/jindarshan-pujan-vidhi
Aadarsh Sravak Jivan	https://archive.org/details/aadarsh-sravak-jivan
Tale of Tarangavati	https://archive.org/details/tarangavati
Guru Geeta	https://archive.org/details/jaingurugeeta
Jivan Nirmankala	https://archive.org/details/jivannirmankala
Labdhi Prakash	https://archive.org/details/labdhi-prakash
Granth Chintan	https://archive.org/details/granth-chintan
Shashtra Chintan	https://archive.org/details/shashtra-chintan

विषयसूचि

प्रवेशक

कथाएँ हमारे जीवन को जीने की नई दिशा दिखाती हैं। ये हमें जीना और जीतना सिखाती है । पुराने जमाने में माता-पिता, दादा-दादी और शिक्षक बच्चों को कथा के माध्यम से सच्चे संस्कार सिखाते थे ।

वीरता के बीज, साहस, आत्मविश्वास और कुछ करने की जिज्ञासा को बचपन में लगाई जाए तो वह बालक पेड जैसे गुणों से व्याप्त सर्वोत्कृष्ट नागरिक बनेगा ।

अब समय बदल गया है। नई तकनीक, छोटा परिवार, व्यवसायी माता-पिता - इन सब के चलते कथा शैली लुप्त हो गई है । **'विक्रम बाल वार्ता-३'** कहानी और सत्य घटना आधारित प्रसंगों को सुनाने का एक अनूठा प्रयास है जो बच्चों को आध्यात्मिक एवं रोचक यात्रा करवाएगा । यह बच्चों का उनके माता-पिता के साथ एक गहरा संबंध बनाएगा और भौतिकवाद से निष्पन्न दूरी मिटाने का काम करेगा ।

एक से बढकर एक बहादुरी के एवं राष्ट्रभक्ति के कथानक हमें वीर, वफादार और सच्चे देशभक्त बनाती है और विपरीत परिस्थितिओं में शीघ्र निर्णयशक्ति प्रदान करती है । सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं, अपितु बडों के लिए भी उमदा प्रेरणादायी है ।

आशा है, यह पुस्तक आपके बच्चों को हमारी संस्कृति से जूडने में सक्षम होगी और इसके जिज्ञासुओं के मन की प्यास बुझाएगी ।

जाने अनजाने में जिनाज्ञा के विरुद्ध हमने कुछ लिखा-छपा हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

हम श्रीमति मानसी प्रशांत शाह - भरुच, राज भास्कर, हिरेन शाह, बुक-शेल्फ - अहमदावाद, सतीश मरडिया - चेन्नाई - अहमदाबाद, प्रिन्टर जयेश शाह - देवराज एवं सभी अर्थ सहयोगीयों को साधुवाद देते हैं ।

सोला रोड, अहमदाबाद
दि. २५-०८-२०२४

उपाध्याय विश्रुतयश विजयजी
(प्रोफेसर महाराज)

E-Book Link : https://archive.org/details/vikram-bal-varta

आवृत्ति : प्रथम • नकल : 3000 • किंमत : रु.150

प्राप्तिस्थान : सोला रोड, अहमदाबाद

चिंतन शाह : 93757 87857
मेहुलभाई शाह : 94263 24200

1. साफ-इन्साफ

काशी की महारानी करुणा अपनी सौ सहेलियों के साथ स्नान करने के लिए निकली है। नदी का निर्मल जल छल-छल बह रहा है और महा मास की ठंडी हवा चल रही है।

शहर से दूर नदी के घाट पर कोई इन्सान नहीं है। पास ही कुछ गरीबों की झोंपड़ियाँ हैं। राजाजी ने आदेश दिया कि सभी झोंपड़ी वाले बाहर चले जाएँ, क्योंकि रानीजी स्नान करने आने वाली हैं। सभी झोंपड़ियाँ वीरान हो गई।

रमणियाँ स्नान कर रही हैं। अन्त:पुर की जेल से छूटी सौ सखियों को आज लज्जा का बंधन कैसे महसूस हो सकता है? सौ आवाज़ो की बड़बड़ाहट, हँसी की गर्जना, कोमल हाथों की ताली और मधुर बातचीत..नदी तो मानो दोसौ हाथों की थप्पड़ खाकर पागल हो गई है। आसमान में शोर मच गया।

महारानी स्नान करके तट पर आई! चिल्लाकर कहा, "सुनो कोई आग जलाओगे? मैं काप रही हूँ। सखियाँ गई और पेड़ की टहनीको खींचने लगी। लेकिन उन कोमल हाथों में एक भी शाखा तोड़ने की ताकत कहाँ थी? रानीने आवाज़ लगाई, "देखो, सामने घास की झोंपड़ियाँ हैं। किसी एक झोंपड़ी को जला दो, इसकी गर्मी से मैं हाथ-पैर सेक लूंगी।"

मालती नाम की दासी बोली, "रानीजी! कैसा मजाक है? उस झोंपड़ी में कोई साधु-संत रहते होंगे। कोई गरीब रहते होंगे, उन बेचारे के एक छोटे से घर को भी जला देंगे?"

"अरे !बड़ी दयावान है !!" रानीजी बाली, "बालिकाओं, ऐसी दयालु बेटी को यहाँ से ले जाओ, और उस झोंपड़ीको जला दो। ठंड से मेरी जान निकली जा रही है।"

दासीओं ने झोंपड़ी को आग लगा दी, हवा की तेजी से, अंदर से ज्वाला निकलने लगी, जैसे पाताल से अंगारे फूट रहे हों। वे स्त्रियाँ गाने नाचने में उन्मत्त हो गई।

भोर के पक्षियों ने चहचहाना बंद कर दिया, पेड़ पर कौवो का झुंड चहचहाने लगा। एक झोंपड़ी से दूसरी झोंपड़ी तक आग फैल गई। पलक झपकते ही सारी झोंपडियाँ जलकर खाक हो गई।

रंगबिरंगी रेशमी चुनरी के पल्लू को लहराते रानीजी हँसते, खेलते सखियों के साथ लौट आई।

•••

राजाजी न्यायासन पर बैठे थे। अपनी झोंपड़ी को रानीजी की ठंड को भगाने के लिए जला दिया गया, उससे बेघर हुए गरीब लोगों ने राज सभा में आकर हंगामा मचा दिया। राजाजी ने बात सुनी, उनका चेहरा लाल हो गया। वे तुरंत अंत:पुर में आये।

"रानीजी! आपने किस राजधर्म के अनुसार बेचारे गरीब लोगों के घर जलाये?" राजाजी ने प्रश्न किया। रानी रुठ कर बोली, "उन गंदी झोंपड़ियों को आप किस हिसाब से घर कह रहे हो? उन पच्चीस झोंपड़ियों का क्या मूल्य? राजरानी के एक घड़ी में कितना पैसा बर्बाद होता है राजाजी?"

राजा की आँखों में ज्वाला जल उठी। उन्होंने रानी से कहा, "जब तक आप इस राजमहल में बैठी हो, आपको यह समझ में नहीं आएगा कि गरीबों की झोंपड़ियाँ जलने से गरीबों को कितना कष्ट होता है। आइए मैं आपको इसे स्पष्ट रूप से समझाता हूँ।"

राजाजी ने दासी को बुलाया और आदेश दिया, "रानी के गहने उतार दो। उनके शरीर से रेशमी चुनरी हटा दो।" आभूषण उतर गये, रेशमी चुनरी उतर गई। राजा ने आदेश दिया, "अब कुछ भिखारिन के कपड़े लाओ और रानी को पहनाओ।"

नौकरानी ने बात मान ली। राजाजी ने रानी को हाथ पकड़ कर राजपथ पर ले आये। राजा ने सभा के बीच में कहा, "काशी की घमंडी रानी! शहर में घर-घर जाकर भीख मांगती फिरो। जब तक आप जली हुई झोंपड़ियों को दोबारा न बना कर दो, तब तक वापस मत आना। मैं एक साल का कार्यकाल देता हूँ।" एक साल बीतते सभा में आकर, सिर झूका कर लोगों को बताना कि कुछ दयनीयों की झोंपड़ियों को जलाने से लोगों को कितनी हानी हुई है।"

राजाजी की आँखों में आँसू आ गए, रानीजी भिखारिन का वेश धारण कर चल दिए। उस दिन राजाजी दोबारा न्यायासन पर नहीं बैठ सके।

सीख : गरीब के लिए झोंपडी की कीमत राजमहल से भी ज्यादा है।

2. बहन का प्रेम

दिल्ली शहर, दोपहर के १२.३० बजे थे। कक्षा १० में पढ़ने वाली संध्या और कक्षा ६ में पढ़ने वाला उसका भाई पिन्टु पाठशाला से घर जा रहे थे। बहन की साइकिल आगे थी और भाई की पीछे। जब वे एक सूनसान सड़क से गुजर रहे थे, एक इक्कीस-बाईस साल के हट्टे-कट्टे युवक ने संध्या की साइकिल रोक दी। वह उसका प्रेमी था, एक तरफा प्रेमी। उसने संध्या को रोका, 'संध्या, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'

'लेकिन मैं तुमसे प्यार नहीं करती, मेरा रास्ता छोड़ो, मैं पिताजी को बताऊँगी', संध्या बोली।

'नहीं, तुम्हें मुझसे प्यार करना होगा। अगर तुम मेरी नहीं होगी, तो मैं तुम्हें किसी की भी नहीं होने दूंगा। आखिरी बार पूछता हूँ, 'हाँ या ना ?', युवक ने धमकाया।

'नहीं... नहीं और नहीं...। लाख बार नहीं,' संध्या ने गुस्से में मना कर दिया और युवक उस पर टूट पड़ा। वह उसके कपडे खींचने लगा। संध्या के भाईने अपनी बहन के साथ छेड़छाड़ होते देखी। वह साइकिल फेंक कर दौड़ आया और उस युवक से भिड़ गया। 'कह रहा हूँ, छोड़ दो मेरी बहन को।' लेकिन छोटे बच्चे की कितनी ताकत ? उस युवक ने चाकू निकाल कर उसकी बहन पर मारा। पिन्टु बीच में आ गया और बहन पर हो रहे वार को अपने ऊपर ले लिया। इस प्रकार एक के बाद एक, कितनी बार चाकू के घाव होते रहे। पिन्टु का सारा शरीर चिर गया था। लेकिन वह बहन के पास से हट नहीं रहा था। आखिरकार उसके शरीर ने जवाब दे दिया। वह बेहोश हो गया। लेकिन तब तक उसने संध्या पर आँच नहीं आने दी। पिन्टु के बेहोश होने के बाद नराधम ने संध्या पर हमला कर दिया। उसने संध्या पर वार कर के उसकी हत्या कर दी।

कई महीनों के इलाज के बाद पिन्टु मुश्किल से बच पाया। लेकिन उसे खुद के जीवित रहने की खुशी से ज्यादा अपनी बहन के मरने का दु:ख था। छठी कक्षा का लड़का ऐसी हिम्मत तभी कर सकता है जब उसके सामने बहन की इज्जत और जान को खतरा हो।

(यह घटना कुछ समय पहले दिल्ली में हुई थी। बस नाम बदल दिए गए है।)

सीख : ''जो भाई घर में तिलचट्टे से भी डरता है, वह अपनी बहन के लिए शेर से भी लड़ने से नहीं हिचकिचाता।''

3. करुणामय आल्बर्ट

आल्बर्ट के पिता पादरी थे। बचपन से ही उसमें परोपकार के बीज बोए गए थे। पढ़ लिख कर वह बड़ा दर्शनशास्त्री (फिलोसोफर) और लेखक बना। सफलता उसके कदम चूमती थी। पैसे के ढ़ेर पर बैठा हुआ था।

एक बार ऐसा हुआ कि आल्बर्ट युरोप के जंगलो में गरीब लोगों के गाँव में मुलाकात पर गए थे। वहाँ के लोगों की स्थिति देख कर वह दंग रह गए। ना कोई अस्पताल, ना कोई पढ़ाई का स्थान, ना ही रहेने और खाने की व्यवस्था। उस गाँव के कई लोग तो छोटी-सी बिमारी में भी, इलाज न होने के कारण, मर जाते थे। वहाँ से लौटते ही आल्बर्ट ने एक कठिन निर्णय लिया। सिद्धहस्त लेखक, दर्शनशास्त्र और पियानो बजाने की चमकती कामयाबी को छोड़कर उसने डॉक्टर बनने का निर्णय किया। दोस्तों ने समझाया फिर भी वह नहीं माना। पुरे ७ साल तक वह डॉक्टर बनने के लिए पढ़ा और अपनी चमकती सफलता को छोड़कर जंगलों के गाँव की ओर चल पड़ा। इस सुंदर कार्य में उसकी पत्नी हेलन ने भी उसका साथ दिया। उसके बचाए हुए पैसों से दवाई और जरूरी सामान लेकर दोनों पति-पत्नी उनके कर्म स्थान, गीच जंगलों के बीच 'लेम्बेरीन' मिशन के किनारे आ गए। मलमल के रेशमी गद्दी-तकिये पर सोए, दोनों उस रात मच्छर और कीड़ों वाले झोंपडे में रहे। सिर्फ रात नहीं, सारी जिंदगी दोनों यहीं रहे और गरीब दर्दिओं का मुफ्त में इलाज करते रहे।

७९ वर्ष की आयु में, अपनी बड़ी मूंछ ताने, भरी सभा में मंच से, महंगे वस्त्रधारी महानुभावों को आल्बर्ट ने दिल से गरीबों के दुख-दर्द और व्यथा से अवगत किया। सभी की आँखें आँसू से भर आईं। मानवता की आजीवन सेवा के उपलक्ष में डॉक्टर आल्बर्ट श्वाइटजर को वर्ष १९५४ में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सीख : हम कितने भी अमीर बन जाएँ, गरीबों की तकलीफ दूर करने की इच्छा सदा हम में रहनी चाहिए।

2

3

4. कोई भूखा रहना न चाहिए

एक भाई बहुत परोपकारी है। वे हर रविवार को भूखे-प्यासे लोगों को संतुष्ट करने के लिए बिस्किट लेकर निकलते हैं। कभी शहर के मंदिरो में जाते हैं। कभी रेल्वे-स्टेशन पर, कभी बस-स्टोप तो कभी पगडंडी पर रहने वाले लोगों को खाना देते हैं।

एक रविवार को भाई रेल्वे-स्टेशन के बाहर पगडंडी पर बैठे कुछ लोगों को बिस्किट बाँट रहे थे। बाँटते-बाँटते वह एक महिला के पास आ पहुँचे। उसकी गोद में एक बच्चा था और एक बच्चा उसके पास बैठा था। उन्हों ने इस महिला को तीन पेकेट दिए और आगे बढ़ गए। थोड़ा आगे चलने पर पीछे से आवाज़ आई, 'ओ साहेब, रुक जाओ।' भाई ने पीछे मुड़कर देखा तो औरत उसकी तरफ दौड़ रही थी। भाई को लगा अपने दुसरे बच्चे के लिए बिस्किट माँगने आई होगी। उन्होंने थैले में से पेकेट निकालने और उसको देने के लिए पास गए। लेकिन उन्हें आश्चर्य हुआ जब वह महिला उनके पास आई और हांफते हुए बोली, 'यह बच्चा तो अभी एक साल का भी नहीं है। वह नहीं खायेगा इसे वापस ले लो और मेरे जैसे किसी और भूखे को दे देना।'

भाई इस गरीब, भूखी महिला की मानवता देखकर आश्चर्यचकित रह गया। वह बोले, 'कोई बात नहीं बहन, इसे अपने पास रखो, तुम्हें शाम को चाहिए होगा ना।'

'साहब शाम की बात शाम को, लेकिन मेरी शाम की फिकर में कोई और दोपहर में भूखा नहीं रहना चाहिए। और वैसे भी इस शहर में मानवता अभी भी मरी नहीं है। अगर उपर वाले की दया होगी तो वह हमारा पेट भरने के लिए आप जैसे किसी दयालु व्यक्ति को भेज देगा। हमारा पेट भर जायेगा नहीं तो पानी पी कर सो जायेंगे, लो ये वापस ले जाओ।'

उस भाई की आँख में आँसू आ गए। वह बोले, 'बहन, तुम्हारी बात सही है। इस शहर में तो अभी मानवता मरी नहीं है। वो तो पगडंडी पर भी अभी जीवित है।

आम आदमी की मदद करना असाधारण मानवता है।

सीख : कई बार गरीब की अमीरता, अमीर से भी बड़ी हो जाती है।

5. कर्तव्य ही कर्तव्य

वर्ष १९२२ का था। कॉंग्रेस द्वारा काकीनाडा में एक बड़े खादी प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए देश के प्रमुख नेता, संत-महंत तथा अनेक उद्योगपति तथा अग्रहार के नागरिक आने वाले थे।

प्रदर्शन शुरु होने से एक दिन पहले प्रबंधकों और स्वयंसेवकों की एक बैठक आयोजित की गई थी। आयोजकों ने साफ निर्देश दिया कि, 'बिना पास या टिकट के किसीको भी अंदर न आने दिया जाए; चाहे वह कोई भी व्यक्ति हो।'

मुख्य द्वार पर एक स्वयंसेविका खड़ी थी। वह अपना काम बहुत ईमानदारी से कर रही थी। वह टिकट धारकों के टिकट देखकर और पास धारकों के पास की जाँच करके लोगों को प्रवेश दे रही थी।

तब एक बड़ा नेता अपने तीन दोस्तों के साथ तेजी से आया और बिना टिकट या पास दिखाये अंदर घुसने लगा। द्वार पर स्वयंसेविका ने तुरंत उन्हें रोका, 'रुकिए, अपना टिकट या पास दिखाइए ! आप देश के बहुत बड़े राजनेता हैं। आपका नाम जवाहरलाल नेहरु है। मेरे मन में आपके लिए बहुत आदर और मान है। आप मेरे पसंदीदा नेताओं में से एक है। मैं आपको रोक नहीं रही। मैं अपना कर्तव्य निभा रही हूँ। मुझे और आयोजकों का निर्देश है कि बिना टिकट या पास के किसीको भी अंदर जाने की अनुमति नहीं है।'

नेहरु और उनके दोस्तों ने टिकट लिया और स्वयंसेविका की सराहना करते हुए अंदर चले गये।

उन स्वयंसेविका का नाम दुर्गाबाई देशमुख था। वे बाद में सांसद और योजना पंच की सदस्य बनीं। उनकी कर्तव्य निष्ठा ने उन्हें बहुत उन्नति दिलाई। लेकिन उस प्रगति में उन्होंने कहीं भी अपने कर्तव्यों से समझौता नहीं किया।

सीख : कर्तव्य सर्वोपरि है, सब से ऊपर है।

4

5

6. इन्सानियत

इंग्लैन्ड के प्रधानमंत्री ग्लैडस्टन जितने राजनीति के कुटनीतिज्ञ थे, उससे कही अधिक मानवीय मामलों में अग्रणी थे । उनकी मानवता की प्रशंसा पूरे इंग्लैन्ड में होती थी । उसका मानना था कि आदमी चाहे कोई भी हो, अमीर या गरीब, मिल मालिक या मिल मजदूर, उच्च पद पर आसीन या चपरासी, किसीको भी अपनी इंसानियत नहीं छोड़नी चाहिए ।

जब इंसान अपनी इंसानियत खो देता है, तब उसकी कीमत शून्य हो जाती है; ग्लेडस्टन ऐसा मानते भी थे और उसका पालन भी किया ।

एक बार ऐसा हुआ कि ग्लेडस्टन किसी समारोह में जाने के लिए निकले थे । रास्ते में उन्होंने एक दृश्य देखा । एक बूढ़ा आदमी हाथलारी (ठेला) खींच रहा था । हाथलारी में लोहे का भारी सामान लदा हुआ था । इतना लोहे का सामान, ऊपर से अधिभार और उसमें ढ़लान वाला रास्ता आया । बूढ़ा प्रयत्न तो कर रहा था, लेकिन हाथलारी उस रास्ते पर चढ़ नहीं पा रही थी ।

ग्लैडस्टन को यह देख कर दया आ गई । वह उससे कई दूर, सड़क के विपरीत दिशा में दूसरी सड़क पर थे । उन्होंने तुरंत ड्राईवर को निर्देश दिया और कार सड़क के किनारे पर रुकवा दी । उन्होंने कहा, 'तुम यहीं रुको, मैं आ रहा हूँ ।'

ड्राईवर बोला, 'लेकिन साहब, आप ऐसे चल कर कहाँ जा रहे हो ?'

'चिंता मत करो, जल्दी आ जाऊँगा ।' बोलकर ग्लैडस्टन उतर कर चलने लगे । चलते-चलते वह उस हाथलारी वाले के पास पहुँच गए । हाथलारी वाला बिल्कुल अनपढ़ था । प्रधानमंत्री उसके पास चल रहे थे और उसे अभी तक जानकारी नहीं थी । कभी कहीं समाचारपत्र में फोटो देखी होगी । अभी वह सामने थे, फिर भी पहचान नहीं सका । उसको तो ऐसा ही था कि कोई सामान्य व्यक्ति जा रहा है । प्रधानमंत्री ऐसे सामान्य व्यक्ति की तरह चल कर कहा जायेंगे । उसने उनको आम इन्सान समझ कर बोला, 'महाशय, थोड़ा-सा मेरी हाथलारी को धक्का दे दोगे ?'

ग्लैडस्टन उसकी मदद करने के लिए ही इस तरफ आये थे । उसने सामने से कहा ना होता फिर भी वह उसकी मदद करने ही वाले थे । हाथलारी वालेने सामने से कहा इसलिए उनको बहुत आनंद हुआ । वह अपना कोट तो कार में छोड़कर ही आए थे । फिर उन्होंने कमीज की आस्तीन को ऊपर कर लिया और हाथलारी को धक्का देने लगे । बड़ी मुश्किल से धक्का देकर उन्होंने हाथलारी को ढ़लान पर चढ़ा दिया ।

ठीक उसी समय एक कंपनी के प्रबंधक (मैनेजर) वहाँ से गुजर रहे थे । उन्होंने ग्लैडस्टन को पहचान लिया । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । इंग्लैन्ड के प्रधानमंत्री, आम आदमी की तरह सड़क पर खड़े थे । वह न सिर्फ खड़े थे बल्कि एक मजदूर की हाथलारी को धक्का दे रहे थे । यह देखकर उसे बहुत बड़ा सदमा लगा ।

वह दौड़ कर उस तरफ गया और उस हाथलारी वाले बुढ़े आदमी को डाँटने लगा । 'अरे मूर्ख ! तुझे पता नहीं है कि तू किससे हाथलारी को धक्का दिला रहा है ? यह अपने देश के प्रधानमंत्री है । उनको सम्मान देने के बदले तू इस तरह हाथलारी को धक्का मरवा रहा है ।' अपनी हाथलारी को धक्का देने वाला खुद प्रधानमंत्री है, यह बात जानकर उस बुढ़े के होश उड़ गए और वह माफी माँगने लगा ।और साथ साथ वह मैनेजर भी हाथ जोड़कर बोलने लगा, 'साहब, इस गुस्ताखी के लिए मुझे खेद है । उसके बदले मैं माफी माँगता हूँ । हमें माफ कर दो, इंग्लैन्ड की जनता तो आपकी प्रजा है ।'

प्रधानमंत्री हँस कर बोले, 'भाई, इसमें माफी की कोई बात नहीं है । इसमें कुछ गलत नहीं है । मेरा पद प्रधानमंत्री का भले हो, लेकिन हूँ तो इन्सान ही । जो व्यक्ति इन्सान हो उसको दूसरे इन्सान के प्रति मानवता दिखानी जरूरी है । इसमें पद का महत्त्व नहीं मानवता का महत्त्व है । मेरे देशवासी की मदद करने में मुझे कोई शर्म नहीं है ।

इतना बोलकर वह चले गए ।

सीख : इंसानियत निभाने में पद या पैसा कभी आड़े नहीं आना चाहिए ।

7. माँ की मानवता

यह वर्षों पहले की बात है। मेदिनीपुर गाँव में एक विधवा अपने बेटे के साथ रहती थीं। हालत बहुत खराब। गाँव में कोई खेत या अन्य कोई काम-काज या कोई व्यवसाय नहीं था। महिला मज़दूरी का काम कर अपने बेटे को पढ़ा रही थीं।

कभी किसी के खेत में काम करने चली जाती, कभी किसी के यहाँ बर्तन-कपड़े धोने चली जाती, कभी किसी शादी में खाना बनाने चली जाती। इस प्रकार उनकी आजीविका चल रही थी। बेटा छोटा था लेकिन माँ के इन काम को देख कर बड़ा हुआ था।

इतनी गरीबी में भी माँ अपने बेटे को खूब पढ़ाई करा रही थीं। बेटे को यह भी पता था कि माँ उसे पढ़ाने के लिए एक के बाद एक, खुद के गहने बेच रही हैं। धीरे-धीरे माँ के सारे गहने बिक गए। बेटा यह सब देख रहा था और मन में सोच रहा था कि माँ ने मेरे लिए बहुत मेहनत की है। उसे शिक्षित करने के लिए माँ ने बहुत कष्ट उठाया है। एक दिन पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनूँगा और माँ को हर प्रकार की सुख-सुविधाएँ दूँगा।

बेटा ऐसे ही अच्छे विचारों के साथ बड़ा हुआ। आखिरकार माँ की मेहनत रंग लाई। बेटा अच्छा कमाने लगा। समाज में उसका नाम हो गया। उसे अपनी माँ के दुःख याद थे। एक दिन उसने अपनी माँ से कहा : 'माँ, आपने मुझे पढ़ाने के लिए बहुत कष्ट उठाया है। तो अब मैं आपको सुख-सुविधा देना चाहता हूँ। अपने इस घर को तोड़कर नया बंगला बना देना है और आपके लिए सोने के गहने लेने हैं। यह पैसे लो और आपको जैसे और जितने गहने चाहिए उतने ले आओ।'

माँ ने पैसे लौटाते हुए कहा, 'बेटा, तुमने इतना कहा, इसी में मुझे सारे सुख मिल गए, समझो सारे गहने भी वापस मिल गए। लेकिन बेटा, हमारे गाँव में एक भी पाठशाला नहीं है। यदि तुझे पैसे खर्च करने ही है, तो इसका उपयोग पाठशाला बनाने के लिए करना। घर और गहने तो ठीक है अभी, आज है तो कल नहीं।'

'लेकिन माँ, मैं ने यह सब आपके लिए कमाया है।'

'बेटा, तुमने भले ही मेरे लिए कमाया है, लेकिन यह गाँव के लोग और गाँव की अगली पीढ़ी मेरे लिए ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। बेटा, भले मैंने तुम्हे गहने बेचकर या कष्ट सहकर पढ़ाया हो,लेकिन इस गाँव के लोगों की मदद भी कम नहीं है। इस गाँव ने हमे सहारा दिया है। इस गाँव ने हमें छाया और शीतलता दी है। कई बार जब तेरी पाठशाला का शुल्क भरने के लिए पैसे नहीं होते थे तो इस गाँव के अच्छे लोगों ने मानवता दिखाते हुए मेरी मदद की थी। आज इस गाँव का कर्ज़ चुकाने का समय आ गया है। तुझे मानवता के खातिर यह काम करना चाहिए। अगर तुम इस गाँव में पाठशाला खोल देते हो तो आने वाली किसी भी पीढ़ी की माँ को मेरी तरह भटकना नहीं पड़ेगा। उन्हें अपने बेटे को पढ़ाने के लिए कहीं दूर नहीं जाना पड़ेगा। बेटा, ये तो इंसानियत का काम है।'

माँ की बातें सुनकर बेटे की आँखे नम हो गई। उन्हों ने कहा, 'माँ, माँ और मानवता के लिए मैं अवश्य अपने गाँव में एक पाठशाला बनवाऊँगा।'

बेटे ने अपने गाँव में एक सुन्दर पाठशाला बनवाई।

पुत्र का नाम ईश्वरचंद्र विद्यासागर और माता का नाम भगवती देवी था।

उनके गाँव में आज भी माँ और मानवता के नाम पर बना 'भगवती विद्यालय', इस घटना और मानवता की गवाही के तौर पर खड़ा है।

सार यह है कि व्यक्तिगत लाभ की कीमत पर भी दूसरों के लिए कुछ काम करना उच्च मानवता है। ऐसी मानवता से ही समाज जीवित रहता है।

सीख : दूसरों का कर्ज़ ना भूलना और उनका कर्ज़ चुकाना ही महान मानवता है।

भगवती देवी
ईश्वरचंद्र विद्यासागर

8. अब पछताये क्या होत है ?

वर्ष १९४५ में विश्व युद्ध छिड़ गया। हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीका ने परमाणु बम फेंके और चारों ओर लाशों के ढ़ेर बिखर गए। दोनों शहर पूरे के पूरे खून से लथपथ थे। पेड़-पौधे सूख गए थे। बच्चों की किलकारियाँ और हर्षित जनता का जश्न मातम में बदल गया था। नदियों के पानी सूख गए थे और खून की नदियाँ बहने लगी थीं।

परमाणु शस्त्र के प्रयोग ने एक ही झटके में मनुष्य और मानव जाति का सफाया कर दिया था। हर तरफ धुआँ ही धुआँ था। धुएँ में न केवल जलते हुए मानव माँस की बल्कि जलती हुई मानवता की भी गंध आ रही थी।

परमाणु शस्त्र की खोज से जुड़े महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन यह देखकर हैरान रह गए। उन्हें यह देखकर गहरा सदमा लगा कि उनका आविष्कार इस तरह मानवता का खात्मा कर रहा है। प्रलयकारी दिन के दृश्यों ने उनको दुःखी कर दिया।

उन्होंने अमेरिकी कमांडर को बहुत ही कटु शब्दों में डाँटा, 'तुमने हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिरा कर पूरी मानव जाति को नष्ट कर दिया है। आपके इस कृत्य से मानव जाति ही नहीं मानवता भी मर गई है। तुम्हें अपने आपको शर्म आनी चाहिए ऐसा करते हुए। मेरा यह आविष्कार विपत्ति के समय काम आने वाला था। आंतरिक युद्ध में एक-दुसरे को नष्ट करने के लिए नहीं।'

लेकिन सब कुछ पत्थर पर पानी साबित हुआ। आइंस्टाइन की बात किसी ने नहीं सुनी। उसका दुःख बहुत बढ़ गया। वह सोच रहा था। 'उफ, मेरी खोज से बहुत नुकसान हो गया। भगवान अब मुझे माफ नहीं करेंगे। मैं ने मानव जाति की भलाई के लिए जो भी खोजें की, जितने भी काम किए, वे सभी इस एक चीज के कारण नष्ट हो जाएँगे। अब मेरा नाम मानवता को मारने वाले के रूप में लिखा जायेगा। लोग मुझे मानवता का हत्यारा कहेंगे, भले ही मेरे दिल में भारी मानवता है।' ऐसे कई विचार उसके मन में दिन-रात घूमते रहते थे।

यदि मेरी खोज एक शुभ खोज होती जिससे दूसरों को लाभ होता तो कितना अच्छा होता ? ऐसे विचारों के साथ उन्होंने फिर इन आविष्कारों के रचनात्मक उपयोग के बारे में लिखना शुरु किया। उन्होंने कई किताबें और ग्रंथ लिखे कि कैसे अमानवीय लोगों द्वारा मानव जाति को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किए गए वही आविष्कार मनुष्यों के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं।

इसके अलावा, उन्होंने परमाणु हथियारों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक अभियान शुरु किया। उन्होंने विश्व नेताओं के साथ पत्रव्यवहार करना शुरु किया, विश्व नेताओं से मिलना शुरु किया। यू.एन.ओ. की स्थापना के भी प्रयास किए गए।

एक इंसान के रुप में, उन्होंने मानव जाति को बचाने के लिए वह सब कुछ किया जो वह कर सकते थे। इस में कुछ हद तक सफल भी रहे।

यहाँ तक कि जब वह मृत्यु शय्या पर थे, तब भी उनके मन में केवल यही बात थी। अपनी मौत से दो दिन पहले उन्होंने लिखा था, 'वह इंसानियत को याद रखें बाकी सब बेकार है। यदि ऐसा करेंगे तो धरती पर एक नया स्वर्गनिर्मित हो जाएगा।'

सीख : हमारा कोई भी आविष्कार, कोई भी विकास, मानवता को नुकसान न पहुँचाये।

आप विश्व में छोटी-छोटी बातों को लेकर, अपने आग्रह के कारण कितने सारे देश आपस में एवं दूसरे देश के साथ लड़ रहे हैं। जैसे कि युक्रेन और रशिया - यह मानवता के विरुद्ध हो रहा है। कई बार तो इनमें अस्पताल एवं पाठशालाओं पर भी बम गिराए जाते हैं, जो युद्ध की नीति के भी खिलाफ है।
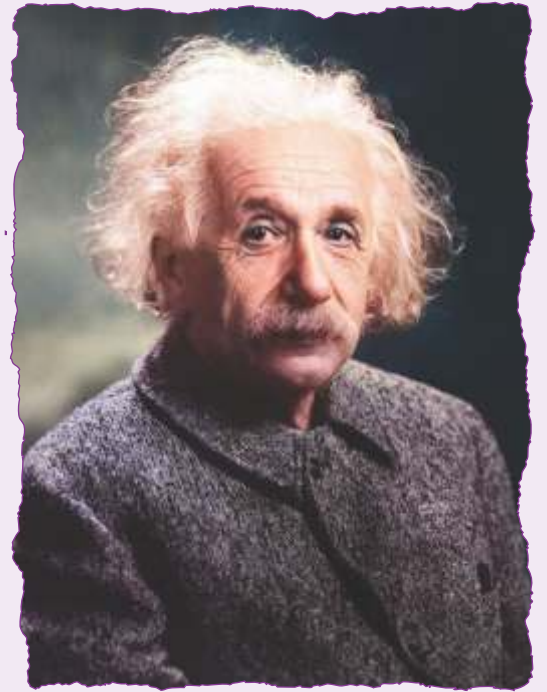
9. दीप जलता रख गए

अमेरिका में एक बड़े दानवीर बने । उनका नाम एन्ड्रु कार्नेगी था । उनका लोहे का बड़ा व्यापार था । वहाँ कई मजदूर काम कर रहे थे । कार्नेगी काफी मानवतावादी थे । किसीका शोषण करने का विचार भी उनके मन में नहीं आता । उनके लिए इन्सान मतलब भगवान और मानवता करनी मतलब भगवान को भजना ।

वह कारखाने के प्रत्येक कर्मचारी का बहुत खयाल रखते थे । वह उनकी क्षमता और काम से एक डॉलर अधिक देते और उन्हें खुश रखते थे ।

हालाँ कि एक लालची कारीगर उनके विरुद्ध हो गया । उसने कई कच्चे कान के कारीगरो को भडकाया, एक संगठन(युनियन) का गठन किया और हड़ताल पर चले गए । वह कर्मचारी इतना बेईमान था, उसने ऐसे समय पर हड़ताल की जब कार्नेगी ने ज्यादा जिम्मेदारी वाला काम ले लिया था । उसकी वजह से वह हैरान थे । उनका काम हुआ नहीं और लाखों डॉलर का नुकसान हुआ ।

परिस्थिति सही करते परेशान हो गए । उस कारीगर का उद्देश्य केवल उन्हें परेशान करना और हानि पहुँचाना था । वह इसमें सफल हुआ । कार्नेगी ने सभी को समझाया और सभी लोग काम पर वापस आ गए । लेकिन काम शुरु होने के दुसरे दिन वह मजदूर बिमार पड़ गया । वह छुट्टी पर चला गया । बिमारी ज्यादा चली ।

वह एक महिने तक बिस्तर में रहा । तभी एक अच्छे डॉक्टरने भयानक बिमारी का निदान किया । उसने कहा 'अगर इसकी जान बचानी हो तो बड़े-अस्पताल में ले जाना होगा और ऑपरेशन करना पड़ेगा ।'

ऑपरेशन का खर्च लाख डॉलर जितना था । कारीगर की आर्थिक स्थिति भी बहुत खराब थी । इतनी बड़ी रकम कैसे जुटाय ? इस सवाल से वह टूट गया । उसका परिवार भी निःसहाय था ।

उसकी पत्नी बोली, 'मुझे बचने का एक ही रास्ता नजर आता है ।'

'बोलो जल्दी ? कौन-सा तरीका ?'

'तुम्हारे सेठ ! उनके अलावा कोई मदद नहीं कर सकता । आप जीना चाहते हो तो उनसे मदद माँगनी होगी ।'

कारीगर सुस्त मुँह से बोला, 'नहीं, यह संभव नहीं है । मैंने उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाया है । क्या मूँह लेकर मैं उनके पास जाऊँ ?'

उसके बाद आर्थिक सहाय के लिए अन्य कई जगह पर विनती की गई । एक दिन अचानक एक अजनबी आया और ऑपरेशन के सारे पैसे दे गया । कारीगर रो पड़ा । ऑपरेशन हो गया और वह स्वस्थ भी हो गया । वह तलाश कर रहा था कि उस पर इतना उपकार किसने किया ?

उसको पता चला कि पैसे उसके मालिक कार्नेगी ने दिए है । वह कार्नेगी के पास गया और पैरों में गिर पड़ा । 'मालिक आपने मेरी जान बचाई है । मैं जितना धन्यवाद दूँ उतना कम है ।'

कार्नेगी ने उसको खड़ा किया और बाहों में ले लिया । कारीगर रोते हुए बोला,'मालिक, मैंने आपको बहुत परेशान किया है । आपके विरुद्ध कई काम किए हैं फिर भी आपने मेरी मदद की और नाम भी नहीं बताया । मेरे जैसे दुश्मन की मदद कर कर आपने बहुत बड़ा उदाहरण दिया है ।'

कार्नेगी ने कहा, 'भाई, तू मेरा दुश्मन तो है लेकिन पहले मानव (इन्सान) है । मैंने तेरा दुःख कारीगर की तरह नहीं इन्सान की तरह देखा था । पैसे की वजह से मृत्यु हो जाये तो मेरी मानवता भी मर जाये । मैंने तुझे जिंदा रखने के लिए मदद नहीं की है । मेरी मानवता को जिंदा रखने के लिए मदद की है । नाम बताता तो तुझे शर्मिंदा होना होता । यह पैसे तुझे लौटाने नहीं है और बदले में वचन देना है कि मानवता का दीप जलता रखेगा ।'

सीख : मानवता महान है । आज हम देखते हैं कि बड़े बड़े चढ़ावे लेकर लोग अच्छा दान देते हैं, यह अच्छी बात है किन्तु साथ में यह ध्यान रहे कि हमारे कार्यालय या घर के नौकरादि को बच्चों की पढ़ाई एवं दवा के खर्च के लिए कहीं भटकना न पड़े ।

STRIKE

10. कद्दू

बात आजादी से पहले की है। कटक से दूर एक गाँव में महात्मा गाँधी की सभा चल रही थी।

हजारों की संख्या में आदिवासी भाई-बहन जुटे थे। वे इस महान आत्मा के दर्शन करने आये थे। सब एक कान होकर सुन रहे थे।

व्याख्यान के अंत में बापू ने देश के काम के लिए योगदान माँगते हुए कहा, 'मैरे प्यारे भाईयों और बहनों! हमारा देश भयंकर संकट से गुजर रहा है। हमें ब्रिटिश गुलामी से छुटकारा पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। गरीबों की सेवा और देश की आज़ादी के लिए लड़ना होगा। मैं आपसे हाथ जोड़ कर निवेदन करता हूँ की आपमें से जो लोग योगदान देने में सक्षम हैं, उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देना चाहिए। उस पैसों का उपयोग गरीबों के उत्थान और राष्ट्र सेवा में किया जायेगा। लेकिन हाँ, यह योगदान अनिवार्य नहीं है। मैं यह निवेदन सिर्फ और सिर्फ सक्षम लोगों के सामने कर रहा हूँ। हर किसीको देने की जरुरत नहीं है।'

अभी बापू के शब्द हवा में गूंज ही रहे थे कि पैसों की बारिश होने लगी। अमीर लोग बहुत कम थे लेकिन गरीब लोगों ने भी बहुत योगदान दिया। हर कोई अपनी शक्ति अनुसार दान करने लगा। पाँच पैसे से लेकर पचास पैसे तक बापू की झोली में आने लगे। बापूने देखा कि गरीब लोग भी पैसे दे रहे थे। जिसको शाम को खाने के लिए पैसे नहीं थे वह भी अपनी बचत से पैसे दे रहे थे। यह देखकर बापू हिल गए। उन्होंने माईक लिया और फिर से घोषणा कि –

'भाईयों, मैं देख रहा हूँ कि आप सभी योगदान दे रहे हैं। मेरा आपसे अनुरोध है कि केवल सक्षम लोग ही योगदान करें। जरुरतमंदो को अपना पैसा देने की जरुरत नहीं है।'

लेकिन बापू की बात किसीने नहीं सुनी। एक के बाद एक सभी लोग लाईन में आकर योगदान दे रहे थे।

बापू चुपचाप बैठ सब कुछ देख रहे थे। वहाँ एक छोटा लड़का आया। उसने एक कद्दू बापू के सामने बिछी झोली में रख दिया।

उसको देख कर लग रहा था कि वह बहुत निर्धन है। उसके शरीर पर सिर्फ एक निकर (चड्डी) थी और वह भी पाँच जगह से फटे को सिलाई की हुई थी।

बापूने उससे कहा, 'अरे, रुक! यह कद्दू क्यों डाला ?'

लड़का डर गया। उसने काँपते हुए कहा, 'बापू, हमारे पास पैसे नहीं है। तो माँ ने कहाँ कि हमें कद्दू देना चाहिए।'

'तुम्हें यह कद्दू कहाँ से मिला ?'

'हमारे घर के पीछे एक पेड़ हैं। इसमें एक कद्दू था। हम रोज इसे पका कर खाते हैं। बापूने पूछा, 'अगर तुम मुझे यह कद्दू दे दोगे तो आज क्या खाओगे ?'

लड़के ने खुश हो कर कहा, 'बापू, मेरी माँ ने कहा कि आज त्याग का दिन है। आज इस कद्दू को त्याग कर हम भूखे रहेंगे।'

बापूकी आँखों से आँसू निकल आए। उन्होंने लड़के को गले लगाया और फूट फूट कर रो पड़े।

ये भारत देश की जनता का त्याग है। यह वो लोग हैं जो त्याग का भी त्योहार मनाते हैं।

सीख : हमें आज़ादी इन धन से निर्धन एवं दिल के धनी के त्याग से मिली है। क्या हम इस आज़ादी का सही उपयोग कर रहे हैं ? यह हमें अपने आप से पूछना है।

11. राजा से भी बडे

अमेरिका की विश्व धर्म-परिषद में भारत का नाम रोशन कर के स्वामी विवेकानंद भारत आए थे। रथ में बैठाकर उनका भव्य स्वागत किया जा रहा था। नागरिक स्वामीजी को खुशी से नमन कर रहे थे। वे उनका रथ खींच रहे थे और उनके दर्शन के लिए भागदौड़ कर रहे थे।

स्वामी विवेकानंद जिस रथ में बैठे थे, उसे खींचने के लिए भक्तों की भीड़ लगी थी।

महाजन, किसान, कारीगर, महिलाएँ, पुरुषों और बच्चों के साथ राज्य के दीवान खुद रथ को खींच रहे थे। भगवा वस्त्र पहने तेजपुंज स्वामी विवेकानंद रथ की शोभा बढ़ा रहे थे।

इतने में राज्य के महाराज स्वयं आ गए और वह भी रथ खींचने लगे। महाराजा का स्वास्थ्य खराब था। उनकी उम्र भी ज्यादा थी। दीवान साहब ने उन्हें रथ खींचते देख लिया। उन्हें ये उचित नहीं लगा।

थोड़ी देर बाद वह महाराज से बोले, 'महाराज साहब, आपसे बात करनी है, जरा बाहर आइए।' दीवानजी उनको भीड़ से थोड़ा दूर ले गए और बोले, 'माफ करना महाराजजी, आपको इस तरह बाहर ले आया इसलिए। लेकिन आप राजा होकर इस तरह एक नागरिक का रथ खींचते मुझे उचित नहीं लगा। विवेकानंद कैसे भी आपका नागरिक है। आप तो राजा हो, महाराजा हो, आप तो देव समान हो। आप इस तरह रथ खींचो यह अच्छा नहीं दिख रहा। मेरी आपसे विनती है कि रथ को खींचने का काम रहने दीजिए और आप विवेकानंद के साथ रथ में ही बैठ जाइए।'

दीवान की बात सुनकर महाराजा हँस पड़े, 'दीवानजी, आप भी तो वैसे विवेकानंद से ज्यादा पदाधिकारी हो। आप क्यों रथ खींच रहे हो ?'

'मेरी बात अलग है महाराजा ! मैं कोई भी पद पर रहूँ मगर हूँ तो एक सामान्य नागरिक। लेकिन आप तो राजा हो।'

महाराजा बोले, 'दीवानजी ! आप जैसे अपनी सत्ता को त्याग कर रथ खींच रहे हो, वैसे मैं भी अपनी सत्ता का त्याग कर रथ को खींच रहा हूँ। भले ही आप ऐसा कहो कि विवेकानंद एक नागरिक है, मेरा प्रजाजन है, लेकिन मैं वैसा नहीं मान रहा।'

'विवेकानंद मेरा प्रजाजन नहीं, मेरा पूजनीय है, क्योंकि वह संन्यासी है। अभी मैं किसी नागरिक का, किसी व्यक्ति का रथ नहीं खींच रहा था,बल्कि एक महान संन्यासी का रथ खींच रहा था। आपको एक बात बताऊँ, सत्ता या धन से कोई महान नहीं होता, महान बनने के लिए त्यागी बनना पड़ता है। स्वामी विवेकानंद त्यागी है। हम सत्ता और धन को पूजनेवाले हैं और विवेकानंद त्याग की मूर्ति। अगर हम उनका रथ नहीं खींचते तो हमारी संस्कृति लज्जित होगी। त्याग ही महान है। सत्ता और लक्ष्मी तो उसके आगे कुछ भी नहीं, चलो रथ खींचने।'

इतना बोलकर महाराजा फिर से रथ को खींचने भीड़ में लग गए। पीछे पीछे दीवानजी भी दौड़े।

सीख : धनवान कुछ ही क्षेत्र में पूजित होता है, जब कि ज्ञानवान, त्यागवान, गुणवान सर्वत्र पूजित होता है।
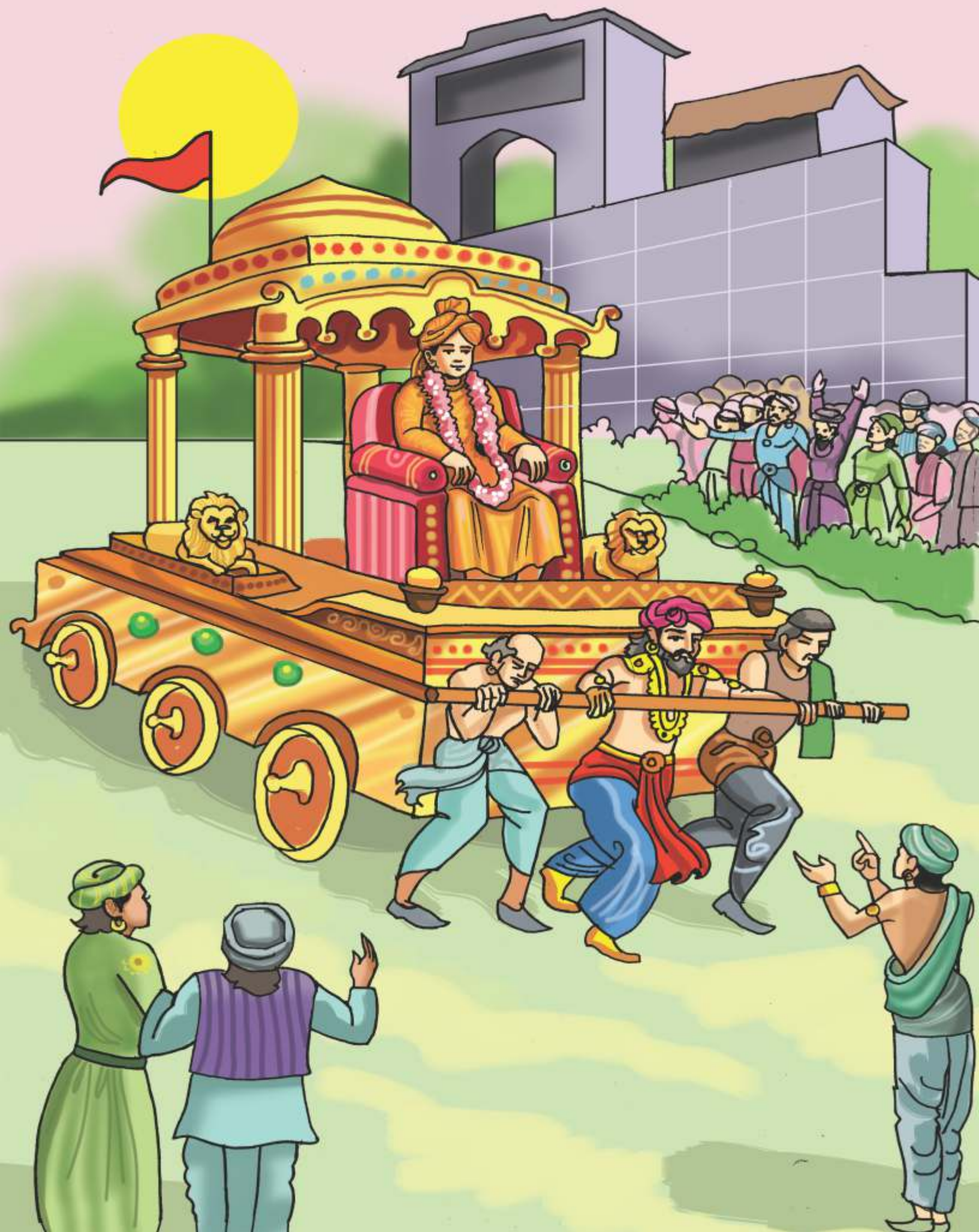
12. फूटपाथ ही सिंहासन

एक महान संगीतकार और संगीत जगत के सितारे, शास्त्रीय संगीतकार स्व. पंडित ओमकारनाथ ठाकुर एक बार हरिद्वार गए। वहाँ एक सड़क से गुजर रहे थे, तो उन्होंने एक निर्धन प्रज्ञाचक्षु संगीतकार को दिलरुबा बजाते हुए देखा। वह दिलरुबा बजाकर लोगों का मनोरंजन करने का प्रयास कर रहा था। इस प्रकार वह धन इकठ्ठा करके अपना पेट भरना चाहता था।

लेकिन उसे दिलरुबा ठीक से बजाना नहीं आता था। उसके बजाने से कोई भी आकर्षित नहीं हो रहा था। अगर कोई खड़ा ही नहीं रहता था तो पैसे देने का सवाल ही कहाँ था ?

पंडितजी को उस पर दया आ गई । उसका यह अपमान किसी निर्धन व्यक्ति का अपमान नहीं, अपितु एक संगीतकार का अपमान था। मानो किसीने उनके कान में कहा हो, **'ओमकार, संगीत का सम्मान करना तुम्हारा धर्म ही नहीं कर्म भी है।'**

वह तुरंत उस निर्धन प्रज्ञाचक्षु संगीतकार के पास गए और बोला, 'भाई अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मैं दिलरुबा बजाने में तुम्हारी थोड़ी मदद कर दूँ।'

वह आदमी अँधा था। वह पंडितजी को पहचान न सका। उसने कहा, 'दिलरुबा बजाना बहुत मुश्किल है । आपने कभी दिलरुबा बजाया है ? आपको दिलरुबा बजाना आता तो है ना ?'

अगर कोई और होता तो ऐसा सवाल सुनकर उनका अहंकार झलकता या गुस्सा आता। लेकिन पंडितजी ने धीरे से कहा, 'हाँ, मैं थोड़ा बहुत दिलरुबा बजाता हूँ। अभी मैं सीख रहा हूँ।'

आखिरकार उस आदमी ने पंडितजी को दिलरुबा सौंप दिया। पंडितजी दिलरुबा लेकर माँ सरस्वती को प्रणाम कर के बैठ गए। कुछ ही देर में दिलरुबा से अद्भूत धुनें बहने लगीं। पंडितजी का स्पर्श होते ही जानो दिलरुबा में साक्षात सरस्वती आकर बस गई हो, ऐसा लगा।

लोग चारों ओर से संगीत की अविस्मरणीय धुनों की ओर आकर्षित होने लगे। कुछ ही देर में वहाँ लोगों की भीड़ जमा हो गई। भीड़ में कई लोगोंने इस महान संगीतकार को पहचान लिया। लेकिन पंडितजी ने संकेत करके उन्हें कुछ न बोलने को कहा।

लोग धुन सुनते रहे और पैसों की बारिश होती रही। पंडितजी ने वहाँ एक घंटे से ज्यादा समय तक दिलरुबा बजाया और खूब पैसे बटोरे।

फिर वह खड़े हुए। सारे पैसे उस निर्धन प्रज्ञाचक्षु संगीतकार को दे दिए और विदा ली। उसने पूछा, 'भाई, आप तो कोई बड़े संगीतकार लगते हो। आपकी धुन मुझे एक अद्भुत दुनिया में ले गई।'

लेकिन पंडितजी ने अपना परिचय नहीं दिया। उन्होंने बस उसके कंधे पर हाथ रखा और चलने लगे।

भीड़ तुरंत उनके पीछे भागने लगी। किसीने पूछा, 'पंडितजी, इतने महान संगीतकार होते हुए भी आप इस तरह पगडंडी पर बजाने क्यों बैठ गए ? आपने उस संगीतकार को अपनी पहचान क्यूं नहीं दी ?'

पंडितजी बोले, 'भाई, संगीत में पगडंडी को भी सिंहासन बनाने की ताकात है। दूसरा, कि मैं अपनी पहचान देकर उस पर अपनी कृतज्ञता का बोझ नहीं डालना चाहता था।'

लोगों की भीड़ इस महान संगीतकार के अद्भुत उपकार को देखती रही और यह महान व्यक्ति दुनिया की भीड़ में खो गया।

सीख : परोपकार कर के जताना, वह परोपकार का अपमान है। प्रकृति स्वयं ही उस परोपकार को चारों ओर फैला देगी।

13. संकट के समय में

पूरे भारत में एक महान रसायणशास्त्री के रूप में माने जाने वाले वैज्ञानिक प्रो. त्रिभुवनदास के. गज्जर मुंबई के महाविद्यालय (कॉलेज) में रसायणशास्त्र (केमिस्ट्री) के अध्यापक (प्रोफेसर) के पद पर थे, तब की यह बात है।

उस समय पूरे मुंबई में मरकी महामारी फैल गई थी। यह एक संक्रमक बिमारी थी और इसका कोई इलाज नहीं था। लोग दवा और इलाज के अभाव से मर रहे थे। स्वयं चिकित्सक, डॉक्टर और वैज्ञानिक अपने-अपने तरीके से इस बिमारी को रोकने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन सभी प्रयास विफल हो रहे थे। मरकी का रोग कैसे भी नियंत्रित नहीं किया जा सकता था।

प्रो. गज्जर भी शहर में फैल रही बिमारी और मरते लोगों से चिंतित थे। वह जानते थे कि इस बिमारी को खत्म करने के लिए क्लोरीन और आयोडिन दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है। इन दोनों का प्रयोग करने से इस रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। हालाँकि डॉक्टर इसका इस्तेमाल कर रहे थे, लेकिन बिमारी पर काबू नहीं पाया जा सका।

प्रो. गज्जर ने सोचा कि अगर इन दोनों दवाओं का एक साथ इस्तेमाल किया जाये तो लोगों को इस बिमारी से मुक्त कर सकते हैं। दूसरों की मदद का जज्बा दिल में लेकर जीने वाले प्रो. गज्जर ने तुरंत सारा काम छोड़ दिया और मिश्रण वाली दवा की खोज में लग गए। बहुत जल्द उन्होंने एक ऐसे मिश्रण की खोज की जो इस बिमारी के खिलाफ प्रभावी साबित हुआ और इसे ***आयोडिन क्लोराईड*** नाम दिया।

डॉक्टरोंने इस मिश्रित दवा का परीक्षण शुरु किया। तुरंत परिणाम प्राप्त हुआ। लोग मौत के मुँह से बचने लगे।

रोग नियंत्रण में आ गया। प्रो. गज्जर अब दिन-रात औषधि का उत्पादन करने लगे। उनके द्वारा शहर भर में निःशुल्क दवा वितरण केन्द्र खोले गए। निर्धन एवं धनवान, किसी से भी दवा के लिए एक रूपया नहीं लिया। चारों तरफ प्रो. गज्जर की जय-जयकार होने लगी।

दो दिन बाद कुछ दवा के निर्माता प्रो. गज्जर के पास आए और बोले, 'प्रोफेसर, आप पागल हो गए हो क्या ? आपके पास हीरे की खान है और आप इसे दूसरों को दे रहे हो। आपके पास जो दवा है, उसका पेटेन्ट हमें दे दो, हम आपको लाखों रूपये देंगे। यह कमाने की तक है। लोग जीने के लिए कितने भी पैसे दे देगें। हम महेंगे दाम में दवा बेचेंगे।"

प्रो. गज्जर ने कहा, 'भाई, मैं इस देश का नागरिक हूँ, संकट के समय देश के नागरिकों की मदद करना मेरा धर्म है। यदि मेरे ज्ञान का उपयोग इस देश की सहायता के लिए नहीं किया जाता है, तो वह ज्ञान धूल बराबर है। मैं आपको कोई पेटेन्ट नहीं देना चाहता। आप चले जाओ।"

प्रो. गज्जर का नाम देश-विदेश की सीमाओं से परे फैल गया। कुछ विदेशी कंपनीयों ने उन्हें इस दवा का रहस्य बताने के बदले करोड़ों की पेशकश भी की। लेकिन गज्जर ने उनसे भी यह कहा, "मैंने यह दवा अपने देश के लोगों की मदद के लिए ढूंढी है। मेरा ज्ञान मेरे देश के लोगों के काम आये, इससे अधिक मूल्यवान कुछ नहीं हो सकता। लोगों का इस बिमारी से ठीक होना मेरे लिए बड़ी मदद और बड़ी रकम है। इसका पेटेन्ट मैं आपको नहीं देना चाहता।"

जब यह बात देशवासियों को पता चली तो उनका नाम और फैल गया।

सीख : कुछ लोगों का यह मानना है कि यदि जीवन में पैसा नहीं तो कुछ भी नहीं, लेकिन कभी कभी व्यक्ति अपने ज्ञान से भी लोगों की मदद कर सकता है। सर जे. सी. बोस भी इसी तरह अपने ज्ञान का उपयोग पैसा कमाने में कभी नहीं किया। लोगों की मदद के लिए ज्ञान का यथासंभव उपयोग करें।

क्लोरीन और आयोडिन

आयोडिन क्लोराईड

रासायणिक प्रक्रिया

14. जेन एडम्स

अमरिका के कोई एक विस्तार में एक निर्धन परिवार रहता था। माता-पिता और एक बेटी। बेटी का नाम जेन एडम्स था। निर्धन मानों बेहद अत्यंत निर्धन। बेटी जवान थी। कॉलेज में थी। लेकिन उसके मन में मदद का सफेद रंग छाया था। उसे मौज-मस्ती से ज्यादा लोगों के दर्द दूर करने में दिलचस्पी थी। लेकिन वह खुद निर्धन थी, इसलिए कुछ कर नहीं सकती थी।

पीड़ित लोगों को देखकर वह हररोज सोचती थी की इन लोगों की कोई तो मदद करे। इतना सोच कर वह रुक जाती। एक दिन वह सुबह कॉलेज जा रही थी। बस की सुविधा तो थी लेकिन उसके पास पैसे नहीं थे। जाने के लिए उसे कई मील पैदल चल कर जाना पड़ता था। जब वह धीरे-धीरे चल कर जा रही थी तो रास्ते में एक लड़के को रोते हुए देखा। वह उसके पास गई और उससे पूछा की वह क्यूं रो रहा है। लड़के ने कहा, 'मुझे बहुत भूख लगी है। मेरे घर में खाने को कुछ नहीं है। मैं क्या करूँ?'

जेन हिल गई (चौंक गई)। उसके पास भी एक रुपया तक नहीं था। वह शर्म से झुक गई। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, "बेटा, मैं कल कैसे भी तुम्हारे लिए खाना लाऊँगी।"

वह आगे चलने लगी। आगे जाते एक पाठशाला के द्वार पर एक छोटी लड़की बैठी-बैठी रो रही थी। जेन ने उससे पूछा, लड़की बोली, "मैंने पाठशाला का शुल्क नहीं चुकाया। इसलिए मुझे स्कूल से निकाल दिया। मुझे पढ़ना है लेकिन हमारे पास पैसे नहीं है।"

जेन क्या बोले? पैसे तो उसके पास भी नहीं थे। वह खुद रो पड़ी और आगे चल पड़ी।

आते आते एक घर के बाहर झगड़ा चल रहा था। एक गरीब किरायेदार को मकानमालिक लातों से मार रहा था। और किरायेदार विनती कर रहा था, 'मालिक, मैं कैसे भी आपका किराया चुका दुँगा। मुझे माफ कर दो। अभी मैं मकान खाली कर के कहाँ जाऊँ? मेरी माँ और मेरी बीवी-पत्नि दोनों बिमार हैं।'

मालिक नहीं माना। उसका सामान बाहर फेंकने लगा।

जेन को एकदम रोना आ गया। आगे जाते उसने इलाज के लिए तड़पते रोगी देखे। पगडंडी पर रहते अनाथ बच्चों को देखा। एक ही दिन में उसने बहुत कुछ देख लिया। उसका दिल अंदर से रो रहा था और आँखे बहार से।

उस दिन वह कॉलेज के लेक्चर में नहीं गई, बहार ही बैठी रही और सोचती रही। वह सोचने लगी, 'समाज में कितना दुःख है, कितने लोग दुःखी है, कितनी तकलीफ है। यह सभी निराधार जरुरियात मंदों की किसीको तो मदद करनी चाहिए। लेकिन कौन करेगा? किसे ढूंढूं मैं?'

ढूंढते हुए उसकी सफर खुद पर आकर रुक गई। उसने सोचा, 'और कोई क्यूं? मैं खुद ही इन लोगों की मदद करुँगी। पैसे नहीं हैं तो क्या हो गया? उनके लिए पैसे कमाऊंगी और ऐसे लोगों की देखभाल करूँगी।'

उस दिन वह घंटो तक सोच कर खड़ी हुई तब उसके तन पर वस्त्र तो वही थे, लेकिन मन पर मदद का रंग लग चुका था। उसने उसी समय संसार का त्याग कर दिया और लोगों कि मदद करने का निर्णय ले लिया।

फिर कभी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। कितने अभाव के बीच वह सोलह साल की लड़की मदद का दरिया तैरने लगी और वह उस मंज़िल पर पहुँची। वह जीवन भर कुँवारी रही और लोगों की इतनी मदद की कि वह मदद का पर्याय बन गई।

आज भी वह अमरिका में अपने मदद के कार्य के लिए जानी जाती है। सारी ज़िंदगी मदद करने वाली यह मददपूर्ति मदद की प्रेरणा और जोश देती है।

सीख : आज परोपकारकी बात आती है तो लोग धनवान पर ही नजर डालते हैं, लेकिन सच बात यह है कि जिसके दिल में परोपकार की भावना है, वह किसी भी हालत में परोपकार करने का रास्ता निकाल लेते हैं। वे बहाना नहीं ढूंढ़ते, अपना काम कर लेते हैं।

15. कान्होजी आंग्रे

अठारहवीं शताब्दी में मालाबार के तट पर एक जलरक्षक नियुक्त किया गया था। इसका नाम था कान्होजी आंग्रे। उस इलाके में उसका बहोत खौफ था। आंग्रे का कार्य था कि वे समुद्र तट से आनेवाले सभी यात्रियों और मेहमानों की जांच करके यह सुनिश्चित करे की वे देश में हथियार या देश के लिए हानिकारक कोई अन्य वस्तु न लायें।

काम बहुत बड़ा था। वफ़ादारी की बहुत जरूरत थी। एक बार एक बड़ा पुर्तगाली जहाज़ कई हथियारों के साथ दक्षिणी तट पर पहुँचा। जहाज को तट पर लाया गया और पुर्तगाली सरदार जहाज़ से नीचे उतरे।

कान्होजी यहीं बैठे थे।

पुर्तगाली सरदार वहाँ आए और उनसे हाथ मिलाया। कान्होजी ने उनका आदरपूर्वक स्वागत किया।

कुछ औपचारिक बातचीत के बाद पुर्तगाली सरदार ने साथ आए सेवकों को आदेश दिया, कि वो दोनों बक्से लाकर कान्होजी साहब को दे दो।

नौकरोने तुरंत दो बक्से लाकर कान्होजी के सामने रख दिए। कान्होजी ने पूछा, 'सरदार, इसमें क्या है ?'

सरदार ने मुस्कुराते हुए कहा, 'सर, मेरे पास आपके लिए एक छोटा-सा उपहार है। इसे स्वीकार करें और हमें अपना काम करने दें। यदि आप सहमत हैं तो हम भी सहमत है।

कान्होजी ने आश्चर्य से पूछा, 'तुम्हारा काम ? कौन-सा काम ?' सरदार ने आँख मारकर कहा, 'इतना सब होने के बाद, पहले तुम ये बक्से खोलो। फिर तुम्हारे पास पूछने को कुछ नहीं रहेगा।'

कान्होजी ने तुरंत दोनों बक्सों के ढ़क्कन खोल दिए। बक्से खुलते ही उनकी आँखे चकाचौंध हो गईं। दोनों बक्से हीरे-जवाहरत और सोने-चांदी के आभूषणों से भरे हुए थे। करोड़ों रुपयों की संपत्ति।

इससे पहले कि कान्होजी कुछ कहें, सरदार ने कहा, 'कान्होजी, ऐसे मत चौंको। ये सभी आभूषण आपके हैं। सारी ज़िंदगी कमाओगे तो भी इतना नहीं मिलेगा। आज आपकी किस्मत खुल गई। ये सब सामान ले लो।'

कान्होजी समझ गये कि सरदार उन्हें रिश्वत दे रहा है। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा, 'मुझे इसका एक कण भी नहीं चाहिए। आप अपना काम बोलीए।'

'अरे, हम जहाज़ पर कुछ हथियार लाए हैं। इन्हें यहीं उतार दो, तो यह सारी संपत्ति तुम्हारी हो जाएगी। आपके जीवन में चार चाँद लग जायेंगे। शांति से जियो।' सरदार ने कान्होजी के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

कान्होजी ने तुरंत उसका हाथ कंधे से हटा लिया और बोले, 'नालायक, तुम मेरी निष्ठा खरीदने आये हो ? उठो वरना तुम बिना गर्दन की लाश बन जाओगे। मैं अपने देश, अपनी धरती के प्रति निष्ठवान हूँ। मैं अपने जीवन के आराम के लिए दूसरों को मरने नहीं दूंगा।'

सरदार फड़फड़ाने लगा, उन्होंने कान्होजी से माफ़ी मांगी, जवाब में कान्होजी ने हीरे जड़ित बक्सों को लात मार दी। सरदार उनकी अपने देश और भूमि के प्रति निष्ठा देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उसने उनसे माफी माँगी और निराश होकर वापस चला गया।

सीख : अपने देश और भूमि के प्रति निष्ठा एक महान धर्म है। आईए हम सब इस धरती के प्रति निष्ठा दिखाएँ और इसका कर्ज़ चुकाएँ।

हमें आज़ादी ऐसे ही अनेक देशभक्तों की देशभक्ति, निष्ठा एवं बलिदान से प्राप्त हुई है। हमें उसको सार्थक करना चाहिए।

- **जो स्वार्थ और लालच से मुक्त है, वही निष्ठवान हो सकता है।**
- **निष्ठा बलिदान माँगती है। निष्ठा मुफ्त नहीं मिलती, इसकी ऊँची कीमत चुकानी पड़ती है।**
- **निष्ठा व्यस्त रखती है, लेकिन मस्त भी रखती है।**
- **निष्ठा पहले तो दु:ख पहुंचा सकती है, लेकिन बाद में यह केवल और केवल खुशी लाती है।**

16. गद्दार

बात सन् १७७२ ई. की है। पेशवा नारायणराव की कीर्ति पूणे में सूर्य के समान चमक उठी।

वह ३० अगस्त की रात थी। नारायणराव पेशवा अपने शयनकक्ष में सो रहे थे। तभी अचानक छह लोग खुली तलवारें लेकर वहाँ पहुँचे और नारायण राव पर हमला करने की कोशिश की। नारायणराव ने समय का उपयोग करते हुए तुरंत खिड़की से बाहर छलांग लगा दी। हालाँकि, तीन खुले सिर वाले छुरें उसकी छाती और पीठ में लगे।

नारायणराव महल के द्वार को फांदते हुए आगे बढ़ रहे थे और उनके पीछे छह नोक वाली खुली तलवारें चल रही थीं। नारायण राव ने दौड़ते समय सोचा कि जो हॉल प्रतिदिन आठ-दस सैनिकों से भरा रहता था, वह आज खाली क्यूं है ? यह लोग महल में कैसे आये ? सारे सैनिक कहाँ चले गए ?

सोचते-सोचते वह अपने चाचा राघोबा के कमरे की ओर भागे। ''चाचा-चाचा, जल्दी उठो। शत्रु ने आक्रमण कर दिया है और हमारा एक भी सैनिक दिखाई नहीं देता। जल्दी उठो।'' नारायण राव सीधे अपने चाचा के बिस्तर पर गए।

चाचा बैठ गए। उन्होंने तुरंत अपने पास पड़ी तलवार उठा ली। नारायण राव उनकी गोद में लैटे हुए थे। उनके सामने छह लोग खुली तलवार लेकर खड़े थे और मन ही मन मुस्कुरा रहे थे।

नारायणराव ने आश्चर्य से कहा, 'चाचा, आप कुछ कहते क्यूं नहीं ? ये लोग जड़ क्यूं हो गए हैं ? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। सब कुछ घूम रहा है।'

'चक्कर तो अभी आएगा बेटा,' राघोबा चाचा ने रहस्यमय और भयानक मुस्कान के साथ कहा। 'आज तू मरने वाला है। यदि तू सिंहासन से हटेगा तो ही मैं सिंहासन पर बैठ पाऊंगा। ये लोग मेरे कहने पर आये हैं। मैंने अंग्रेजों से दोस्ती कर ली, समझ गया ? इसीलिए मैंने आज इस महल के सभी सैनिकों और अंगरक्षकों को विदा कर दिया है।'

'चाचा आपने मुझसे बेवफाई की ? आपने ?' नारायण राव ने आश्चर्य से कहा।

'नहीं बेटा, इसे बेवफाई नहीं कहते। बेवफाई यह है कि चाचा बैठे और भतीजा राज करे। मुझे तो राज्य चाहिए।'

'राज्य?' चाचा, आपको हिन्दु शासन बेचकर राज्य पाने का शौक है ? क्या आप भारत को बेचकर, मातृभूमि को अंग्रेजों के हाथ सौंपकर यह सब कर रहे हैं। यह बेवफाई है।'

'ये जैसा भी हो। तेरा समय आ गया है,' बोलते हुए राघोबा ने छह लोग को आदेश दिया, 'मार दो इसे !!!'

जैसे ही मारनेवाले नारायणराव पर हमला करने के लिए आगे बढ़े, तिलेकर नाम का एक सिपाही खुली तलवार लेकर सामने आया, 'खबरदार अगर किसीने मालिक पर उँगली भी ऊठाई। शरीर के टुकड़े भी हाथ नहीं आयेंगे।'

तिलेकर नारायणराव के वफादार सिपाही थे। उन्होंने नारायणराव को कहा, 'महाराज, मुझे सुबह से ही आपके चाचा की साजिश की बू आ गई थी। सभी लोग चले गये लेकिन मैंनहीं गया। सबने पैसे खाये हैं महाराज।'

'शाबाश तिलेकर। लेकिन मेरी मृत्यु निश्चित है। तुम जाओ।' 'महाराज, जब तक मेरी साँस चलेंगी, मैं आपको कुछ होने नहीं दूँगा,' बोलकर तिलेकर हमलाखोरों पर टूट पड़े। राघोबा ने उसे जमीन-जायदाद का लालच दिया लेकिन वह नहीं रुका। भयानक युद्ध छिड़ गया। अंततः वफादार तिलेकर की हत्या कर दी गई और नारायणराव भी शहीद हो गए। शहादत में वफा का रंग था।

सार यह है कि अपनी वफादारी निभाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में भी संकोच नहीं करना चाहिए।

- इंसान त्योहार मनाने में जितना माहिर है, वफा मनाने में उतना माहिर नहीं है।

- वफादारी मानव अवतार का एक महत्त्वपूर्ण कर्म है।

सीख : आश्चर्य यह है कि जिस देश में एक ही योद्धा हजारों की बराबरी कर सके वह ३५ करोड़ की बस्तीवाला देश केवल ३५ हज़ार लोगों के नीचे २५० साल तक गुलाम क्यों रहा ? उसका कारण यहाँ है - राघोबा जैसे गद्दार की वजह से।

17. वफादारी को सलाम

अंग्रेजी हुकूमत के जमाने में वड़ोदरा राज्य के मेहसाणा जिले में एक न्यायाधीश थे। उनका नाम था ए.आर. शिंदे। उन्हें महाराजा सयाजीराव गायकवाड के वफादार साथियों में से एक माना जाता था। महाराजा को उन पर खुद से भी ज्यादा भरोसा था।

जब भी महाराजा विदेश यात्रा पर जाते, तब शिंदे भी साथ जाते थे। महत्त्वपूर्ण निर्णयो में दोनों की भागीदारी होती थी।

वे एक बार महाराजा के साथ फ्रांस की यात्रा पर गए थे। उनका प्रशासनिक कार्य निपटाने के बाद भी अभी काफी समय बाकी था। महाराजा ने शिंदे से कहा, 'भाई, ऐसे बैठेंगे तो हम ऊब जायेंगे। आओ कहीं चले।'

शिंदे महाराज के पूछने का इंतजार कर रहा था। उसने तुरंत कहा, 'महाराजा, यही तो मैं आपको बताने वाला था। पास में ही आभूषणों की एक बड़ी दुकानहै। उस जौहरी के पास दुनिया भर के सर्वोत्तम रत्न है। आप कहें तो वहीं चलें, अगर आपको पसंद आये तो खरीदना बाकी देखकर वापस आ जायेंगे।'

महाराजा ने तैयारी दिखाई, 'अरे वाह ! रत्न मिलते है, तो जायेंगे चलो।'

महाराजा और शिंदे दोनों पेरिस के उस बड़े आभूषण बाजार में गए। वहाँ की नामचीन दुकान पर गए। दुकानदार यह जानकर हैरान रह गया कि भारत के एक प्रमुख राज्य के महाराजा अपने लिए वहाँ खरीदारी करने आये हैं। उन्होंने महाराजा और शिंदे का दिल से स्वागत किया।

वहाँ ऐसे ऐसे रत्न थे जिन्होंने महाराजा को चकाचौंध कर दिया। महाराजा ने वहाँ से बहुत सारा सामान खरीदा और वापस आ गए।

उसी शाम, जौहरी का एक प्रतिनिधि शिंदे से मिलने आया। उन्होंने उनके सामने कई रुपये रखे और कहा, 'शिंदे साहब, अपनी दलाली लीजिये।'

'किस बात की दलाली ?' शिंदेने आश्चर्य से पूछा।

'आप महाराजा जैसे बड़े ग्राहक को हमारी दुकान पर ले कर आये उसके लिए दलाली !'

'अरे, भाई पागल हो गए हो क्या ? यदि मैं कोई दलाली लूँ तो यह महाराजा के प्रति विश्वासघात कहा जायेगा। मैं उनके प्रति विशेष रूप से वफादार हूँ। वे मुझ पर बहुत भरोसा करते हैं। मैं उनका भरोसा तोड़ नहीं सकता।'

'साहब, ऐसा नहीं है। यही यहाँ की रीत है। हम हर सचिव और प्रतिनिधि को देते हैं।'

'भाई, वह आपकी रीत है और मेरी वफादारी की मुद्रा मेरी रीत है। मैं उस रीत के अनुसार ही काम करना चाहता हूँ। यह पैसे लेकर जाओ, और महाराजा को दलाली की रकम घटा कर हिसाब दे दो। यदि मैं यह धन ले लूँगा तो राज्य पर कितना बोझ पड़ेगा। मैं बेवफा माना जाऊँगा, समझे !!!' शिंदेने उसको जोर से डाँटा।

प्रतिनिधि आश्चर्यचकित और प्रसन्न हुए और बोले, 'साहब, आपकी वफादारी को सलाम ! मैं यह बात महाराजा साहब तक जरुर पहुँचाऊंगा।'

शिंदेने उसे फिर समाझाया, 'भाई, इसमें महाराजा साहब को कुछ नहीं कहना है। वफादारी मेरा धर्म है। यह सिर्फ मेरा ही नहीं, हर भारतीय का धर्म है। हम ईसमें कोई नया काम नहीं कर रहे। यह आश्चर्य की बात नहीं है।

प्रतिनिधि ने सलाम किया और मुस्कुराते हुए चला गया।

सीख : वफादारी कोई उपकार नहीं, हमारा धर्म है और उसको निभाना ही चाहिए।

18. कर्तव्य

भारतीय इंजीनियरिंग के पितामह डॉ. विश्वेश्वरैया का व्यक्तित्व खूब सरल था। हालाँकि वह बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे, फिर भी उन्हें इस बात का कभी घमंड नहीं था। वह एक आम आदमी की तरह समाज में रहते और अपने कर्तव्य का पालन करते थे।

विश्वेश्वरैया मैसूर रियासत के दीवान थे। उस समय वे सेवा कार्य हेतू एक गाँव में गए। एक आम आदमी की तरह वह सारे कार्य करते थे। काम करते समय अचानक उनके हाथ में चोट लग गई। उँगली खून से व्याप्त हो गई। घाव बहुत गहरा था और खून बहना बंद नहीं हो रहा था।

गाँव के लोग और आयोजक चिंतित हो गए। इतने बड़े आदमी का इस तरह घायल होना ठीक नहीं था। तुरंत गाँव के सबसे अच्छे चिकित्सक को बुलाया गया। चिकित्सक ने उनका इलाज किया। उंगली पर टांके लगाये गए और पट्टी बाँध दी गई।

जब चिकित्सक जाने के लिए उठे तो विश्वेश्वरैया ने उन्हें शुल्क के रुप में पच्चीस रुपये दिए। चिकित्सक ने कहा, 'आप क्यों शर्मिंदा कर रहे हो ? मैं भाग्यशाली हूँ कि आप जैसे महान व्यक्ति की सेवा करने का अवसर मिला। आपने देश की सेवा की, आपकी सेवा करना मेरा कर्तव्य है।'

विश्वैश्वरैया ने कहा, 'आपका कर्तव्य मेरा इलाज करना है और मेरा आपको शुल्क देना है, मुझे मेरा कर्तव्य करने दो। कर्तव्य में न तो कुछ सामान्य है, ना ही विशेष। अगर सामान्य मरीज होते तो आप पैसे ले लेते, तो मैं भी वही हूँ। कर्तव्य में ऐसा भेदभाव नहीं होना चाहिए।' ऐसा कहकर उन्होंने चिकित्सक को फीस देकर अपना कर्तव्य पूरा किया।

– एक बात याद रखें, यदि आपके पास चरित्र है, तो प्रतिष्ठा, पैसा, सुख और शांति सभी आपके घर का पता पूछते आएँगे।

सीख : आज के जाने-माने बड़ों को इस दृष्टांत से समझना चाहिये कि छोटों का शोषण करना अनुचित है।

19. मैं तुम्हें चुनता हूँ

नोबेल पुरस्कार विजेता महान वैज्ञानिक सी.वी. रामन ने शोध संस्थान की स्थापना की। उन्हें इस नए संगठन के लिए वैज्ञानिक सहायकों की भर्ती करनी थी।

साक्षात्कार (इन्टरव्यू) खत्म हुआ, रामन अपना काम खत्म करके बाहर चले गए। बाहर एक उम्मीदवार बैठा था।

'भाई, मैंने तुमसे साक्षात्कार में ही कहा था कि तुम्हें भौतिकशास्त्र(फिजिक्स) में कोई विशेष ज्ञान नहीं है, इसलिए मैं तुम्हें अपने संस्थान में नहीं ले सकता। तुम अभी भी यहाँ क्यों बैठे हो ?'

'नहीं, साहब ! मैं नौकरी के लिए नहीं बैठा हूँ, लेकिन बात यह है कि आप की संस्था द्वारा मुझे दिया गया यात्रा भत्ता मेरे खर्चे से कई अधिक है। इसलिए मैं उस अतिरिक्त राशि को वापस करने के लिए यहाँ बैठा हूँ। आप अभी व्यस्त थे तो, मैंने सोचा आपके आते ही मैं यह दे कर चला जाऊँगा।'

थोड़ी देर रुक कर रामन ने कुछ सोचा और उस युवक को लेकर अंदर गए। उसको नौकरी का नियुक्ति पत्र हाथ में देते हुए कहा, 'भाई, मैं तुम्हें अपने संस्थान में वैज्ञानिक सहायक के पद पर स्थापित कर रहा हूँ।'

'साहब ! आप तो कह रहे थे कि मुझे भौतिकशास्त्र का पूरा ज्ञान नहीं है, फिर आप मुझे क्यों चुन रहे हैं ?'

रामन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'भाई, मैं तुम्हें वो सिखा सकता हूँ। तुम्हारा यह उत्कृष्ट चरित्र ही तुम्हारी सब से बड़ी योग्यता है। कोई भी यह नहीं सीखा सकता, इसलिए मैं तुम्हें चुनता हूँ।'

सीख : चरित्र ही मनुष्य का सच्चा गौरव है।

19

20. मेरा चरित्र मुझे रोकता है

जब गणमान्य व्यक्ति दाखिल हुए तो दुकानदार को समझ नहीं आया कि उनका स्वागत कैसे किया जाये।

स्वागत के बाद वह सज्जन को साडियाँ दिखाने लगा। दुकानदार ने आठसौ रुपये की एक साड़ी दिखाई, जो कि सबसे महंगी थी। सज्जन ने कीमत पूछी, 'भाई, इसकी कीमत क्या है ?'

'जी, कीमत छोड़ो आप साड़ी ले जाओ।'

'नहीं, फिर भी आप कीमत तो बताइये, क्या कीमत है इस की ?'

'हाँ, आठसौ रूपये।'

'बहुत महंगी है। थोड़ी सस्ती दिखाओ।'

फिर दुकानदार ने चारसौ रूपये की एक साड़ी दिखाई। सज्जन बोले, 'अरे भाई ! मैं एक गरीब और आम आदमी हूँ। मुझे पचास रुपये से लेकर सौ रुपये तक की एक बेहद सस्ती साड़ी दिखाओ।'

दुकानदार हँसा, 'सरकार, क्यों आप हमारा मजाक बना रहे हैं। आप इस देश के प्रधानमंत्री हैं। आप गरीब कैसे हो गए ? और दूसरी बात कि यह साड़ी आपके खरीदने के लिए नहीं है, आपको हमारा उपहार है।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'नहीं भाई। मैं यह साड़ी आप से उपहार के रुप में नहीं ले सकता।'

दुकानदार ने विनम्रता से आदरर्पूवक कहा, 'आप हमारे देश के लिए इतना कुछ कर रहे हैं। क्या हमें अपने प्रधानमंत्री को उपहार देने का कोई अधिकार नहीं है ?'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'आप सही हैं। जिस प्रकार आप का देने का अधिकार है, उसी प्रकार मुझे न लेने का भी अधिकार है। समझ लो कि हर चीज मुझ तक पहुँच गई है। क्योंकि यह आप का प्रेम है। प्रधानमंत्री के तौर पर मैं ऐसा कोई उपहार स्वीकार नहीं कर सकता। मेरा चरित्र मुझे ऐसा करने से रोकता है। एक बार जब मैं इस तरह का उपहार ले लेता हूँ तो फिर मुझे इसकी आदत लग जायेगी। मेरा चरित्र फिर कलंकित हो जायेगा। मेरे लिए मेरे चरित्र से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।'

दुकानदारने बहुत अनुरोध और अनुनय विनय किया, लेकिन प्रधानमंत्री ने उपहार स्वीकार नहीं किया।

'लाल बहादुर शास्त्री' उस महान प्रधानमंत्री का नाम था जो अपने चरित्र को बनाए रखने के लिए सदैव सजग एवं प्रयत्नशील रहते थे।

सीख : किसी व्यक्ति के चरित्र की कीमत इस बात से पता चलती है कि वह किसी कमजोर व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करता है।

21. आजीवन शिक्षक

किसी ने डॉ. अब्दुल कलाम से पूछा कि मरने के बाद वे कैसे पहचाने जाना चाहेंगे ? भारत के पूर्व राष्ट्रपति के रूप में, भारत रत्न के रूप में, एक महान वैज्ञानिक के रूप में, २०२० के दूरदर्शी के रूप में या सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक के लेखक के रूप में ? डॉ. अब्दुल कलाम ने कहा, '**एक शिक्षक के रूप में।**' वह जीवनभर शिक्षक ही रहे। उनका व्यक्तित्व तीनों विभूतियों का मिश्रण था, जैसे प्रत्यक्षता में महात्मा गांधी, विचारों में स्वामी विवेकानंद और जिज्ञासा में अल्बर्ट आईन्स्टाइन। वे कहते थे '**जब भी हम किसी को कुछ सिखाते हैं, तो असल में हम कुछ नया सीख रहे होते हैं।**'

पाठशाला, विद्यालय, महाविद्यालय आदि शिक्षण संस्थानों में व्याख्यान देते समय वह स्थान और समय भूल जाते थे। जिस भी संस्थान में वे व्याख्यान देते थे, वहाँ के छात्रों को लगता कि कलाम साहब हमारे जैसे ही हैं। उत्तर प्रदेश की एक पाठशाला में पाँचवी-छठी कक्षा के छात्रों को व्याख्यान देने के बाद छात्रों ने कुछ सवाल पूछे। बातचीत तीन घंटे तक चली। किसीने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें शाम को दूसरे संस्थान में भी पहुँचना है। चाहे वह हवाई अड्डा हो, समुद्र तट हो या मंदिर का मैदान, छात्र-समूह जो कुछ भी सीखना चाहता था, तो वह अपनी बात भूलकर उन्हें खुशी से समझाते, सिखाते थे।

जब वह थुम्बा में अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के प्रमुख थे, तो उनकी टीम के एक वैज्ञानिक ने अपने बच्चों को प्रदर्शनी में ले जाने के लिए शाम को जल्दी घर जाने की अनुमति मांगी। कलाम साहब ने जाने की अनुमति दे दी। उन्होंने देखा कि वैज्ञानिक अपने काम में इतना तल्लीन था, कि वह भूल गया कि उसे शाम को जल्दी निकलना है। तो उसे बिना कहे ही कलाम सा'ब उसके बच्चों को प्रदर्शनी में ले गए।

यदि कोई उन्हें नई जानकारी देता था तो वे उसे भी रुचि से सुनते थे। प्रमुखस्वामी के समक्ष जाकर बैठने की विनम्रता केवल कलाम साहब ही दिखा सकते थे, जब कि वे स्वयं राष्ट्रपति थे। कभी किसी संस्थान में व्याख्यान के दौरान बिजली चली जाती, तो बिना माईक के उन्होंने सबके बीच जोर-जोर से अपना व्याख्यान पूरा किया है। यदि उन्हें किसी संस्थान में व्याख्यान देने का निमंत्रण मिला तो उन्होंने कभी वापसी की उम्मीद नहीं की। उस स्थान पर जाने में कितना समय लगता है ? क्या सुविधाएँ मिलेगी ? इसके बारे में भी कभी पूछताछ नहीं की। तमिलनाडु की एक संस्था में जाते हुए रास्ते में गाड़ी खराब हो गई और पहुँचने पर रात के बारह बज गए, फिर भी उन्होंने घंटों से इंतजार कर रहे छात्रों को निराश नहीं किया।

एक शिक्षक के रूप में डॉ. अब्दुल कलाम की विनम्रता, खुलापन और निराभिमानता स्पष्ट थे।

मैं एक गरीब और
आम आदमी हूँ ।

22. संध्या के रंग

शाम का समय था । प्रकृति का सुंदर वातावरण था । आकाश विभिन्न रंगों से सजा हुआ था । आसमान पर अलग अलग रंगोलियाँ मानो प्रकृति के रंगों से रंगी हुई थीं । नवीनतम रंग-बिरंगी रंगोली से वातावरण मंत्रमुग्ध हो रहा था । इतना ही नहीं, माहौल भी पल-पल बदल रहा था । हर पल की नई रंगोली ।

मनुष्य चाहे कितना भी बड़ा कलाकार क्यों न हो, लेकिन कुदरत के आगे वह बौना होता है । चित्रफलक (कैनवास) पर चित्र बनाने और फिर उसमें रंग जोड़ने में उसके कई घंटे बीत जाते हैं । दिन और महीने बीत जाते हैं । दुनिया को सर्वश्रेष्ठ कला देने में कभी-कभी जीवन भर लग जाता है । और यहाँ कुदरत की प्रकृति पल-पल एक नई कला आकाश के चित्रफलक पर उतारती है । चित्रकला और रंग भरने का काम अलग-अलग नहीं, सब एक साथ होता है ।

श्रीहनुमानजी अपने महल के किनारे पर बैठे हुए पल-पल बदलती हुई मन लुभाती इस रंगोली को देख रहे थे ।

पवनपुत्र हनुमान, अंजनासुत हनुमान, रामभक्त हनुमान, अब प्रकृति मस्त हनुमान बन गए हैं । प्रकृति की कला चलती है, हनुमान की आँखे चलती हैं । प्रकृति की कला निखरती है, हनुमान का मुख निखरता है । प्रकृति की कला खिलती है, हनुमान का रंग खिलता है ।

संध्या का रुप खिलता है, हनुमान का मुख 'वाह-वाह' शब्द बोलने के लिए खुलता है । संध्या और हनुमान मस्ती में मस्त बने हैं । दुनिया जिसे कुंवारा कहेती है वह हनुमान इस संध्या के पीछे पागल बने हैं । एक ही नज़र से वह संध्या के इस खिले हुए रुप को देख रहे हैं ।

अपनी प्रिय मानुनी संध्या के पल्लू को पकड़ने के लिए आकाश की ओर हाथ उठा रहे हैं । वह अपनी प्रियतमा के मोरे वचन को विभिन्न रंगो से सजाने के लिए ही मानों कि संध्या भी पल-पल नए-नए रुप बदल रही है ।

हनुमान और संध्या का रुप पूरबहार में खिला है । दोनों मस्त बने है । धीमी मस्ती दोनों तरफ फैली है और तभी... एक ऐसा पल आया, संध्या गायब हो गई । हनुमान ने उसे अपनी बाहों में नहीं लिया, इस वजह से रुठ गई । प्रेमिका रुठकर चली जाती है, वैसे संध्या भी अंधेरे में गायब हो गई ।

एक क्षण पहेले संध्या का जो ओजस था एक क्षण के बाद गायब हो गया । यह देख कर हनुमानजी सोच में डूब गए । विचार के आकाश में अब वह चमकने लगे ।

यह एक खुबसुरत पल आया, लेकिन वह भी आकाशी संध्या । भाग्य में ही भगिनी नहीं है । संध्या की खुबसुरती में क्या लुभाना ? आज रुप निखरा है, भाग्य खिला है, और एक ही पल में सनत कुमार चक्रवर्ती के जैसे रुप का लावण्य शरीर से उतरता दिखे । प्रकृति का स्वभाव है ।

संध्या के रंग के उपर रात के रंग से वैराग्य प्रगट होता जाये । उभरता रुप एक दिन खटकने लगे । इस विचार के आकाश में वैराग्य का रंग प्रकट हुआ । हनुमानजी अब वैराग्य के रंग में रंग गए । संध्या का रंग उतरा और हनुमानजी के वैराग्य का रंग उभरा । बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी भगवान के शासन में श्री हनुमानजी ने पंच महाव्रतधारी दीक्षा ली और चारित्र का निर्मल पालन करके, कर्मो को हरा कर मोक्ष पद पाया ।

सीख : प्रकृति से, कुदरत से वैराग्य को मिलाया । प्रकृति में वैराग्य देने की ताकत है । हमें हमेशा प्रकृति के नजदीक रहना चाहिये ।

जंगल में अपने पूर्व कर्मों के साथ जंग खेलती अंजना सती ने हनुमानजी को जन्म दिया । चैत्र सुदी पूर्णिमा का दिन था । हनुपुरनगर के राजा प्रतिसूर्य, जो अंजना के मामा थे, अपने विमान में बैठ कर वहाँ से पसार हो रहे थे । उन्होंने यह देखा और अंजना और हनुमान को अपने विमान में ले लिया ।

आकाश में आगे बढ़ते विमान से अचानक हनुमान नीचे गिर गए । जिस शिला के उपर वह गिरे वह शिला चूर-चूर हो गई । हनुमान को कुछ नहीं हुआ । इस कारण से हनुमान को **वज्रांग** कहा गया । जिससे नाम बना बजरंग । (बजर = वज्र+अंग)
बजरंगबली हनुमान की जय हो ।

23. जैन श्रावक के नाम लिखी गई...

'पिताजी यदि आप माफी मांगोगे तो आप मुझे कुत्ते की औलाद समझना। माफी नहीं मांगोगे तो मैं अपने आप को शेर का बच्चा समझुंगा,' तोप के मुँह के सामने खड़ा बारह वर्षीय बालसिंह तोप के जैसे गरजा।

ग्वालियर के मैदान में अंग्रजों की तोप छुटे उससे पहले इस बच्चे के मुख से शब्द छुट पड़े।

२२ जून १८५८ का दिन था जब इस बालसिंहने गर्जना की थी। यह बच्चा बांठिया परिवार से था।

यह घटना भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराने के संघर्ष के एक मार्ग के रुप में घटी थी। इन शब्दों का चक्रवात अमरचंद बांठिया नामक एक जैन स्वतंत्रतावादी का पुत्र था। बालसिंह ने यह बात अपने पिता से कही।

ऐसा हुआ था कि सन् १८५७ में स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत हुई। यह संघर्ष भारत पर शासन कर रहे अंग्रेजों को भारत से बाहर करने के लिए शुरु हुआ था। अंग्रेजों की एडी के नीचे कुचलाते हुए भारत को छुडाने के लिए उस समय रानी लक्ष्मीबाई, पेश्वा, तात्या टोपे, बहादुरशाह जफर आदिने सामुहिक संग्राम की शुरुआत की थी।

उस समय जिसके पास जो शक्ति थी उसका वह व्यक्ति उपयोग करता था। जिसके पास पैसे हो वह पैसे देता। शरीर की शक्ति वाले शक्ति का प्रयोग करते। बुद्धिमान व्यक्ति दिमाग का उपयोग देश के लिए करते। सभी का एक ही लक्ष्य था; अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद करवाने में पूरे सहयोगी बने। 'तन, मन और धन की मेरी संपत्ति जो जरुरत के समय पर देश के और धर्म के काम मे ना आए तो मेरी संपत्ति बेकार है। जरुरत के समय जो संपत्ति काम ना लगे तो वह क्या काम की ? जरुरत के समय जो काम ना लगे वह बेकार...'

उस समय, मूल रुप से बीकानेर के रहने वाले और बाद में व्यापार के लिए ग्वालियर में बसे जैन स्वतंत्रता सेनानी अमरचंद बांठिया भी इस संघर्ष में शामिल हो गए — तन से भी, मन से भी, धन से भी।

संपत्ति समय के साथ चलने के लिए है। समय को बचा लेना। संपत्ति को बचाने के लिए समय बर्बाद ना करें।

इन विचारों से अपने आप को भावित करने वाले श्रेष्ठीवर्य श्री अमरचंदजी बांठिया ने अपनी संपत्ति को रानी लक्ष्मीबाई के चरण में समर्पित कर दी। रानी लक्ष्मीबाई के सैन्य का बारह साल तक के वेतन से लेकर सारे खर्च का इंतजाम हो गया। इसलिए रानी लक्ष्मीबाई आदि लोगों का उत्साह बढ़ गया। इनका उत्साह आसमान छू गया।

अंग्रेजों को इस बात का पता चल गया। उनके सामने लड़ रहे इस सैन्य को पैसे का सागर इस अमरचंद बांठिया ने बांटा है। तुरंत ही अंग्रेजोंने कलम उठाई। अमरचंद को गिरफ्तार किया। इन विद्रोहीओं (रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे आदि) को अमरचंद पैसे देकर विद्रोह कराते हैं। देश के लिए लड़ रहे लोगों को अंग्रेजों ने देशद्रोही बताया और अमरचंद को गुनहगार ठहरा कर ग्वालियर के मैदान में खड़ा किया गया।

अंग्रेज अधिकारिओंने अमरचंद को समझाया कि, 'तू इस में से हट जा। कोर्ट में बयान कर दे कि मुझसे गलती हो गई। मैं माफी मांगता हूँ। तो तुझे फांसी की सजा नहीं होगी; अन्यथा तुझे फांसी की सजा सार्वजनिक रुप से दी जायेगी।'

अमर होने के लिए बने हुए अमरचंद नहीं माने। कई बार समझाने के बाद जब अमरचंद नहीं माने तब अंग्रेज अमरचंद के बेटे को लेकर मैदान में आए और कहा 'अमरचंद मान जा, नहीं तो तुझे तो फांसी होगी ही, लेकिन उससे पहले तेरे इस बेटे को तेरी आँख के सामने तोप के मुँह पर उल्टा लटका कर तोप से उड़ा दीया जायेगा।'

बेटे को तोप के मुँह पर उल्टा लटका दिया गया। यह देखकर एक पिता का दिल दहल गया, आँखें रो पड़ीं, पिता बेबस हो गए। तब बालसिंहने यह गर्जना की, **'पिताजी यदि आप माफी मांगोगे तो आप मुझे कुत्ते की औलाद समझना। माफी नहीं मांगोगे तो मैं अपने आप को शेर का बच्चा समझुंगा।'**

अमरचंद दृढ़ बन गए। वह एक स्वतंत्रता सेनानी बन गए। बर्बर अंग्रेजों ने बालक को तोप से उड़ा दिया और अमरचंद को ग्वालियर के बीच बाज़ार में फांसी पर लटका दिया गया।

यह स्वतंत्रता संग्राम की दूसरी फांसी थी जो जैन श्रावक के नाम लिखी गई।

अंग्रेजों ने पहली फांसी किस जैन श्रावक को दी थी ?

हांसी (हिसार) के जैन श्रावक हुकुमचंद जैन को १९ जनवरी १८५८ के दिन फांसी दी गई थी। दूसरी फांसी अमरचंद बांठिया को २२ जून १८५८ के दिन दी गई थी।

सीख : हमें देश के प्रति वफादार रहना चाहिये, चाहे अपनी जान की आहुति ही क्यूं न देनी पड़े।
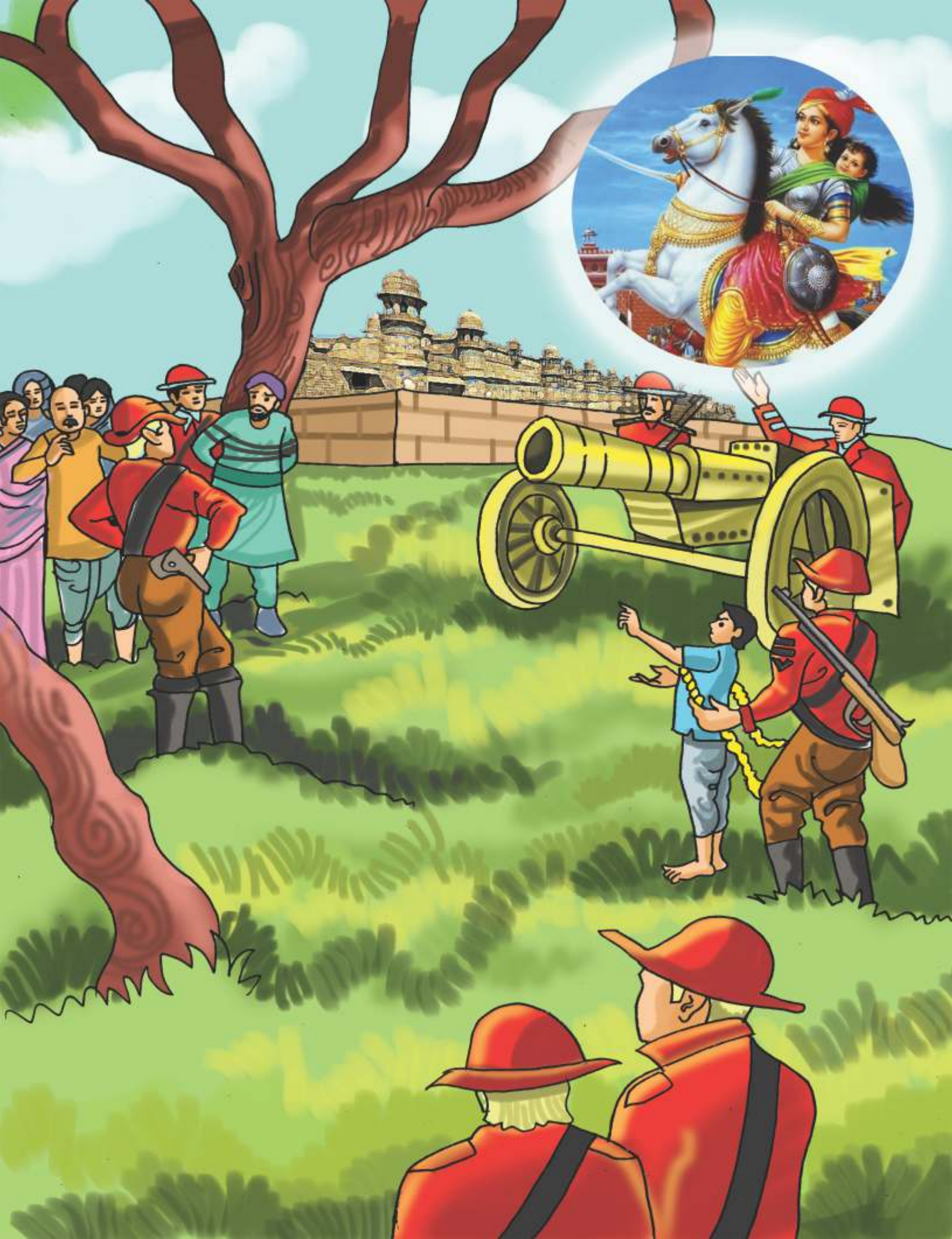
24. भाले की नोक से भिक्षा

'यदि कोई मनुष्य भिक्षा लेकर भाले की नोक से भिक्षा देता है, तो ही भिक्षा स्वीकार करनी, अन्यथा नहीं ।'

"भाले पर भिक्षा ?" "हाँ, हाँ, भाले पर भिक्षा ।"

"मतलब ?" "अर्थात् भाले के अग्र भाग में, नुकीले भाग पर भोजन रखकर वह भिक्षा भिक्षु को देना ।"

"एसा किस लिए ?"

साधु महाराज ने ऐसा अभिग्रह (भिक्षा के लिए विशेष नियम) अपनाया है कि यदि कोई मुझे भाले की नोक से भिक्षा दे, तो ही भिक्षा का स्वीकार करना है, अन्यथा नहीं...।

"ऐसा उन महाराज ने बताया था ?"

"नहीं, साधु महाराज कुछ नहीं बताते ?"

"तो पता कैसे चलता है ?"

"पता ही नहीं चलता ! यह छह महीने बाद पता चला।"

"मतलब ?"

"इन साधु महाराज ने छह महीने पहले ऐसा अभिग्रह लिया था कि अगर कोई इस भाले की नोक से भिक्षा देता है तो भिक्षा स्वीकार करो, अन्यथा नहीं । और ऐसा अभिग्रह लेकर वह घर-घर भिक्षा के लिए घुमते हैं । लेकिन ऐसे भिक्षा कहाँ से मिलेगी ? कोई भी इन्सान भाले के अग्र भाग से भिक्षा क्यूं देगा ? हाथ से देगा, चम्मच से देगा लेकिन भाले से कौन देगा ?"

"तो फिर वो रोज भिक्षा के लिए क्यूं निकलते होंगे, जब कोई भाले से भिक्षा देगा तब ही निकलना चाहिए ना ?"

"यह तो कैसे समझ आयेगा... वह हररोज भिक्षा के लिए समय से निकलते, सिर्फ दुपहर के २ से ३ घंटे तक की वह भिक्षाचर्या के लिए निकलते, गाँव-गाँव का विहार भी इसी समय पर करते, बाकी के २१ घंटे तक वह काउसग्ग (ध्यान) में ही खड़े रहते ।"

"सोते भी नहीं है ?" "नहीं, सोते नहीं, बैठते नहीं । सिर्फ ध्यान में रहते । आज छह महिने बाद उन्हें भिक्षा मिली । एक सैनिक ने उनको भाले के नुकीले भाग से भिक्षा दी । और साधु महाराज ने भिक्षा ली । छह महिने से उनको निर्जल उपवास थे । आज उनका पारणा हुआ । आज उन्होंने भिक्षा ली । और कल फिर से कोई ऐसा सख्त (अभिग्रह) नियम ले लेंगे ।

"एसे कठिन नियम क्यों लेते होंगे ?"

"मनुष्य अपना सार बढाने के लिए आत्मशक्ति को जागृत करने के लिए कठोर नियम अपनाता है । मनुष्य जैसे-जैसे कठोर नियम लेता है, वैसे-वैसे उसकी (आत्मा) की शक्ति बढ़ती है ।"

आत्मा की आंतरिक शक्ति बाहर आती है । नियम से मनुष्य के जीवन में और आत्मा में बहार खिल जाती है और इस सत्व से वह सदाबहार बन जाता है ।

"चलो, मुझे भी उनके दर्शन करने हैं और जीवन को धन्य बनाना है ।"

बातचीत कर रहे दोनों नगरवासी जिस की चर्चा कर रहे थे, उन साधु महाराज का नाम था **भीम महाराज...** जब से आचार्य श्री धर्मघोष सूरीश्वरजी महाराज के पास पाँच महाव्रत के नियम लिए, तब से वह इस प्रकार के विशिष्ट, उग्र, जल्दी न पूरे हो सके वैसे अभिग्रह और नियम लेते रहते थे ।

ऐसा नहीं था कि केवल भीम महाराज ही ऐसे नियम लेते थे, परंतु अन्य चार पाँडवो, श्री युधिष्ठिर महाराज, श्री अर्जुन महाराज, श्री नकुल महाराज और श्री सहदेव महाराज भी इस प्रकार के उग्र अभिग्रह लेते थे । हालाँकि पाँचों में श्री भीम महाराज के नियम अभिग्रह ज्यादा कठिन थे । नाम भी भीम और प्रतिज्ञा भी भीष्म...। यह थी पूर्वभव की आराधना ।

और ... .. जराकुमार द्वारा ही श्रीकृष्ण की हत्या के बारे में सुनकर पाँचो पांडव तीव्र वैराग्य की स्थिति में आ गए । उत्कृष्ट वैराग्य से दीक्षा लेने के बाद चारित्र पालन में उत्कृष्टता तो होगी ही ना । महाभारत की कहानी के सर्वश्रेष्ठ पात्र माने जाने वाले पाँचों पांडवों का गृहस्थ जीवन भी सबसे अच्छा था । १४ वर्ष का वनवास जीवन भी सर्वोत्तम था । तो आखिरकार संयम जीवन भी सबसे अच्छा जी रहे थे ।

उत्कृष्ट कोटि के अभिग्रह और महिनों तक के निर्जल उपवास... बिना नींद की अप्रमत्त साधना और ज्ञान की आराधना का महायश... पाँचों पांडव द्वादशांगी (बारह अंगो का संपूर्ण ज्ञान) में पारंगत निपुण बने थे ।

बाइसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान का निर्वाण हुआ, जान कर, पाँच पांडव मुनिराज बीस करोड़ साधुओं के साथ शाश्वता गिरिराज श्री शत्रुंजय महातीर्थ पधारे और अनशन करके आसो सुदि पूर्णिमा - शरदपूर्णिमा के पवित्र दिन पर २० करोड़ साधु महाराज तथा श्री कुंती माता साध्वी के साथ मोक्ष सिधाये...।

•••

25. बेकसूर को बचाना

फंदा तैयार था। ऊपर क्षैतिज तख्ते पर मोटा रस्सा बंधा था। नीचे एक कुर्सी थी। कुर्सी पर जिसको फांसी होने वाली थी, वह युवक खड़ा था।

जिस व्यक्ति को फांसी दी जानी है उसे कुर्सी पर खड़ा रखा जाता है। उसके चेहरे को काले कपड़े से ढ़क दिया जाता है। उसके बाद ऊपर लगा रस्सी का फंदा आदमी के गले में डाल देता है। जब समय आए, यानि जब अधिकारी 'ओके' कहे, तो आदमी के पैरों के नीचे से कुर्सी-मेज हटा दी जाती है। आदमी उस फंदे में लटक जाता है। पैर नीचे लटक रहे होते हैं। रस्सी में गला फंस जाता है। जैसे-जैसे फंदा छोटा होता जाता है, उसकी साँसें छूटती जाती हैं। एक पल में साँसें रुक जाती हैं। हिल रहे पैर स्थिर हो जाते हैं। तब समझा जाता है कि उसकी साँस रुक गई है और वह मर चुका है।

काले कपड़े से चेहरा ढ़का होने से ऊपर की हिलचाल नहीं दिखती। नेत्रों के गोलक बाहर आ जाते हैं। जीभ मुँह के बाहर लटक जाती है। पीड़ा और भय के मिश्र भावों से चेहरा विकृत हो जाता है। लेकिन जनता कुछ देख नहीं पाए इसलिए चेहरे को काले कपड़े से ढ़क दिया जाता है।

इस युवक के चेहरे को काले कपड़े से ढ़कने के लिए जल्लाद आगे आया। तब यह युवक बोल उठा, 'मुझे कोई परवाह नहीं है। मैं चहेरे पर मुस्कान के साथ फाँसी पर चढ़ जाऊँगा। मैं डरपोक नहीं हूँ कि रो पडुँ। भगवान महावीर का धर्म जानता हुआ जीव मृत्यु से नहीं डरता।'

'जीने के लिए जो भीख नहीं माँगता और मरने का जिसको डर नहीं है वो ही असल में वीर के सच्चे वारसदार होते हैं।'

फाँसी की रस्सी को हाथ में पकड़ते और काला कपड़ा जल्लाद को वापस देते हुए वह युवक बोला, 'जो कहीं भी डरता ना हो और जो कभी भी रोता हुआ ना हो, वो ही वीर के पुत्र। जो किसी को डराता ना हो और रुलाता ना हो, तो वो है वीर सपूत। जो हमेशा हँसते हुए जीवन गुजारे और जो सदाबहार होता है, वो है महावीर के अनुयायी।'

जल्लाद इस इंसान को देखता ही रह गया। उसका फौलादी जीवन देखकर वह फीका पड़ गया। उसकी आँखें नम हुईं और दिल रो पड़ा।

युवक ने फंदा गले में डाला और खुद ही कुर्सी अपने पैर से खिस्का कर दूर हटा दी।

एक पल के लिए सबने अपनी आँखे मूंद लीं।

लेकिन जब आँखें खोलीं तब सब हैरान रह गए। रस्सी टूट गई थी। युवक नीचे गिर गया था। जिंदा...।

यह खबर ब्रिटन की महारानी विक्टोरिया को भेजी गई।

ऐसी घटना पहली बार घटी थी। रस्सी को फिर से जांचा गया। नई ठोस रस्सी, कोई घिसाव नहीं, सड़न नहीं।

सजा थी मात्र फंदे पर लटकाने की, जो पूरी हो चूकी थी। सजा उसको मार डालने की नहीं थी, लेकिन रानी विक्टोरिया ने उसको फिर से फांसी देने का आदेश दिया, जो सरासर गलत था। अंग्रेजों का वह जमाना, उनकी मन-मर्जी का कानून चलता था।

फिर से फाँसी पर लटकाया गया। फिर एक बार रस्सी टूटी। और तीसरी बार भी यही हुआ।

अब रानी कहती है, 'यह इन्सान नहीं है। यह भगवान है। भाग्यवान है। इसे छोड़ दिया जाए।'

उसे छोड़ दिया गया। इतना ही नहीं, खुद महारानी विक्टोरिया उनको वंदन करने आईं। यह युवक था **मोतीशा शेठ।**

और इसकी इच्छा से रानी विक्टोरिया ने लिखा कि, 'जब मोतीशा शेठ यहाँ से पसार हो और बोले कि इसकी सजा माफ कर दो, तब वह फाँसी की सजा माफ कर दी जाए।'

मुंबई के मुंबादेवी इलाके में दी जाती फाँसी की सजा को इसी कारण से दूसरी जगह स्थानांतरित कर दिया गया।

मोतीशा ने कितने ही बेकसूरों की फाँसी की सजा रद करवाई थी और भगवान की भक्ति में लोगों को जोड़ा था। वह कहते थे कि प्रभु की भक्ति में गजब की ताकत है। अपना खुद का फाँसी का फंदा टूटा था। उसका मुख्य कारण था, फाँसी के दिन की गई प्रभु की भक्ति, भगवान की पूजा करते वक्त वह बोले थे —

'प्रभु जो मैं बेकसूर हूँ तो ही मुझे बचाना, नियम की अवहेलना ना हो देखना, जिनशासन का महिमा आप के हाथ में है प्रभु, सत्य को बचाना।'

सीख : सत्य की सदा जय होती है।

26. जवाब - लाजवाब

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन एक दिन किसी सभा में भाषण दे रहे थे। उनके भाषण से लोग बहुत मंत्रमुग्ध हो गए। उस बैठक में उनका एक विरोधी भी मौजूद था। वह अब्राहम लिंकन की सफलता से बहुत इर्ष्या करता था। उसने खड़े हो कर लिंकन की बात काटते हुए कहा, 'भाई, यह बड़े-बड़े भाषण बंद करो। मैं जानता हूँ कि आप किस कुल से आते हैं।'

लिंकन ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने अपना भाषण जारी रखा। उस विरोधी को ज्यादा गुस्सा आने लगा। उसने कहा, 'लिंकन आज आप इतनी महान बातें और सभ्यता सिखा रहे हो, लेकिन मेरे पिता की पेढ़ी में आपके पिता चप्पल सिलने का काम करते थे, आप एक चप्पल सिलने वाले के बेटे हैं। कहाँ मैं और कहाँ आप ? आज आप के पास ताकत है तो आप बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं ? आज के लिए शुभकामना।' और प्रतिद्वंद्वी हेय दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।

बैठक में हंगामा मच गया। लोग एक-दूसरे से पूछने लगे, 'अरे ! क्या लिंकन के पिताजी चप्पल सिलते थे ?'

सभा में हंगामा देखकर लिंकन ने तुरंत प्रतिद्वंद्वी से कहा, 'भाई, तुम सही कह रहे हो। तुम्हारे पिता की पेढ़ी में मेरे पिता चप्पल सिलते थे। लेकिन मुझे एक बात का जवाब दो, जब मेरे पिताजी तुम्हारे पिता के वहाँ काम करते थे, तो क्या मेरे पिता ने कुछ गलत किया था ?'

लिंकन के प्रश्न का उत्तर देने के लिए भाई ने अपना गला साफ़ किया। तभी एक बूढ़े भाई ने बैठक से उठकर कहा, 'लिंकन सर ! मैं उस समय उसी पेढ़ी में काम करता था। आपके पिता ने बहुत ईमानदारी से काम किया। वह अपनी कला में माहिर थे। एक बार जब कोई उनकी बनाई हुई चप्पलें पहन लेता, तो फिर किसी और की बनाई हुई चप्पलें उसे पसंद नहीं आती।'

लिंकन ने फिर प्रतिद्वंद्वी से पूछा, 'भाई, उत्तर दो ! क्या मेरे पिता सचमुच अच्छा काम कर रहे थे या नहीं ?'

अब वह उत्तर दिए बिना न रह सका। उसे कहना पड़ा, 'हाँ, बहुत अच्छा काम ! चप्पलों की अच्छी सिलाई !'

"ठीक ! तभी मुझे अपने पिता की कार्यकुशलता पर गर्व है। मैं इसे नीची दृष्टि से नहीं देखना चाहता। मेरे पिता चप्पलें सिलते थे ताकि दूसरे लोग वही महसूस कर सकें जो वे महसूस कराना चाहते हैं। लेकिन मेरा मानना है कि उन्होंने जो काम किया, उसे गर्व के साथ किया है। कार्य के प्रति निष्ठा एवं प्रामाणिकता बहुत बडी चीज़ है।"

यह कहते हुए उन्होंने उस विरोधी की ओर देखा और कहा, 'भाई, तुम अपने हिसाब से काम करो ! मैं अपने मुताबिक काम करता हूँ। तुम्हें गर्व है कि मेरे पिता कहाँ काम करते थे ! लेकिन मुझे इस बात पर गर्व है कि वे क्या काम करते थे और कैसा काम करते थे ! यही सच है ! उन्हें भी इस पर गर्व था।' इतना कह कर लिंकन बैठ गए।

उस विरोधी के दुःख का कोई अंत नहीं था। भीड़ने तालियाँ बजाई और लिंकन की जय-जयकार की।

सीख : सत्य पर घमंड मत करो, अभिमान करो।

27. माँ ही माँ है

महान विद्वान सर विलियम्स जोन्स को ई. १८८३ में कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त किए गए। वह अपने जीवन में अपनी माँ का बहुत सम्मान करते थे। देखा जाए तो वह अपने परिवार की सफलता का श्रेय अपनी माँ को देते थे।

एक दिन उनके एक दोस्त नेपूछा, 'दोस्त, जब देखो आप अपने जीवनकी सफलता और दुनिया की खुशियों का श्रेय अपनी माँ को देते हो। क्या आपके पिता ने जीवन में आपकी सफलता में योगदान नहीं दिया? मैं आपके परिवार को जानता हूँ। आपके पिता ने भी बहुत बड़ा व्यापार किया है। आप भी अपनी मेहनत के कारण सफल हैं। जब कि आपकी माँ एक साधारण गृहणी थीं। तो फिर आप सफलता का श्रेय पिता की बजाय सिर्फ माँ को ही क्यों दे रहे हैं?'

सर विलियम्स को प्रश्न बहुत पसंद आया। उन्होंने कहा, 'आप सही कह रहे हो भाई, यह सच है कि मेरे पिता ने बहुत सफलता हासिल की है, कड़ी महेनत की है। लेकिन वह सब मेरी माँ ही के कारण हुआ। मुझे तुम्हें एक कहानी सुनानी है। एक दिन मेरे पिता गंभीर रुप से बीमार पड़ गये। उनका व्यापार बर्बाद हो गया। हम पर बहुत कर्जा हो गया। यह जानकर कि पिताजी बीमार है, सभी लेनदार पैसा डूबने के डर से घर पर चक्कर लगाने लगे। पिता बहुत दुःखी थे। उनके दिमाग के पुर्जे हिल चुके थे। केवल एक ही व्यक्ति था जो पैसा लेने नहीं आया। वह व्यक्ति मेरे पिता का खास दोस्त था। बाहर रहता था। पिता को उस पर बहुत गर्व था। बार-बार कहते 'देखा, सच्चे दोस्त ही काम आते हैं। सभी लेनदारोंने मांग की लेकिन उसने नहीं की। इसकी वजह से मैं बच गया हूँ। अगर उसने भी ऐसा किया होता तो मैं सदमे से मर जाता।'

मेरे पिता उस मित्र से सचमुच प्रेम करते थे। उस पर बहुत विश्वास करते थ। लेकिन एक दिन उनका यह विश्वास गलत साबित हुआ। उस मित्र का पैसा लेने केलिए पत्र आया। यह पत्र सबसे पहले मेरी माँ ने पढ़ा, लेकिन चेहरे पर जाहिर नहीं होने दिया। पिताजी को मालूम था कि उस मित्र का पत्र आया है। वह बिस्तर पर लेटे हुए थे। वह खड़े होकर नहीं पढ़ सकते थे, इसलिए माँ से पढ़कर सुनाने के लिए कहा। माँ ने पत्र तो पढ़ लिया लेकिन बात बदल कर। उन्होंने उगरानी की कहानी पढ़ने के बजाय गलत बात पेश की और कहा, 'वे लिखते हैं - प्रिय मित्र, आप की बीमारी की खबर मिली। मुझे खेद है कि मैं नहीं आ सका। बीमारी के कारण आपका काफी खर्चा भी हो गया होगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि अगर आपको पैसों की जरुरत हो तो बिना झिझक मुझसे ले लेना। मैं बहुत अमीर तो नहीं हूँ, लेकिन अगर आपको जरुरत होगी तो मैं आपकी मदद करुँगा। आपका दोस्त।'

यह सुनकर पिताजी भावुक हो गए। इस तरह मेरी माँ ने चतुराई से काम लेकर मेरे पिता को सदमे में मरने से बचा लिया।

ऐसे कई मामले है, जिनमें मेरे पिता का जोश और जुनून मेरी माँ की प्रतिभा के कारण ही जुड़ा। मेरी माँ की चतुराई के कारण ही उन्होंने व्यापार में हर जगह जीत हासिल की है। इतना ही नहीं, मैं अपनी माँ की प्रतिभा के कारण ही आज यहाँ तक पहुँच पाया हूँ, इसलिए मैं इसका पूरा श्रेय अपनी माँ को देता हूँ।'

विलियमने बोलना समाप्त किया। मित्र समझ गए कि जीवन का असली निर्माता वही है जो चतुराई से काम करता है और जीवन में सफलता लाता है।

सीख : यदि आप जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो समझदारी से आगे बढ़े।
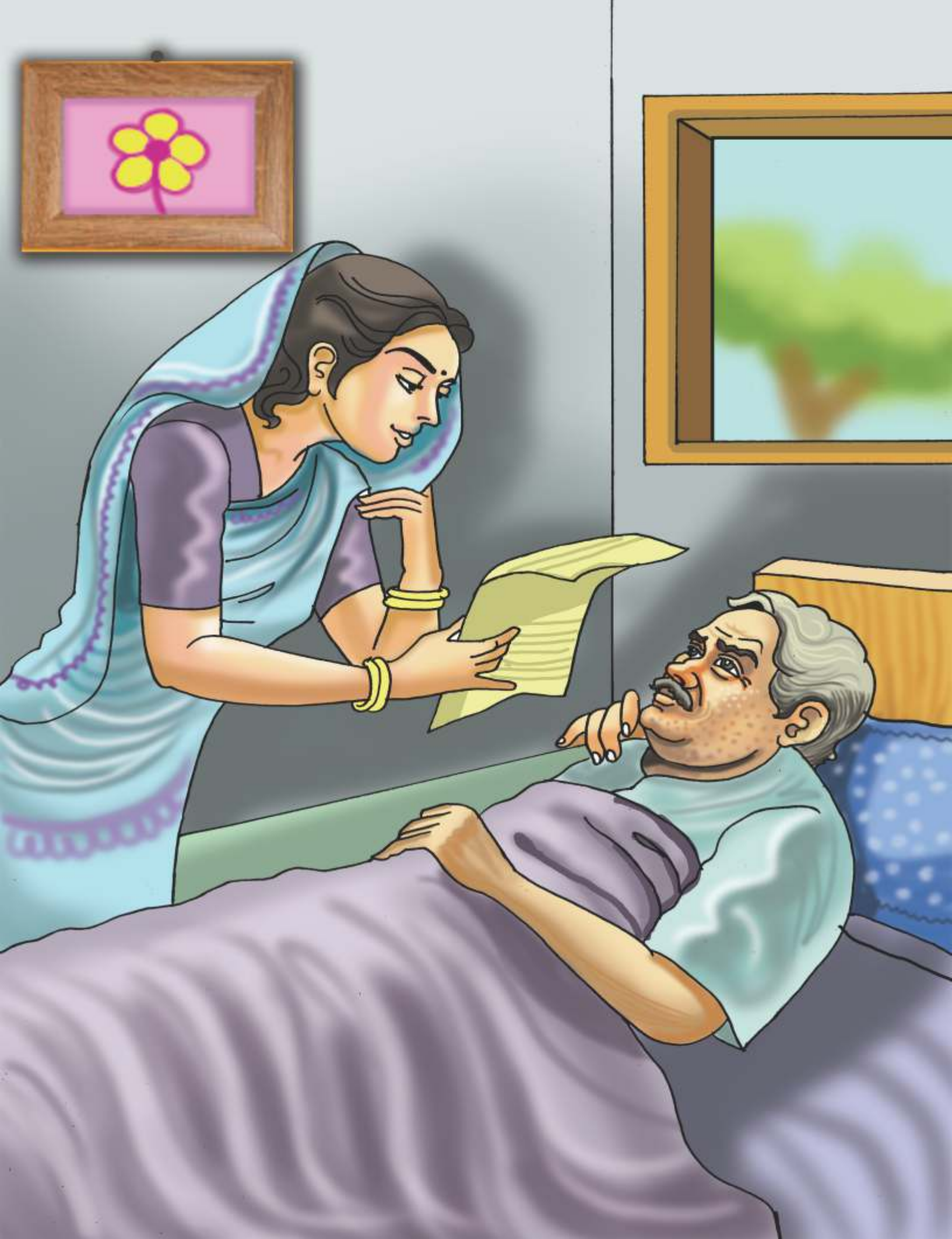
28. दृढ़ इच्छाशक्ति

यह सर्वविदित है कि प्रसिद्ध विद्वान इरविंग जो भी ठान ले वह कर सकते थे। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्हें वह सब करने की शक्ति कैसे मिली जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। उस महान उपलब्धि के पीछे उनका जबरदस्त दृढ़ संकल्प था।

इसके अभ्यास के कई उदाहरण है, आइए उनमें से एक पर नज़र डालें।

गौरतलब है कि एक समय इरविंग को ग्रीक भाषा नहीं आती थी। एक बार उनके घर में एक यूनानी शब्दकोष मिला। पहले पन्ने पर उन्हीं की लिखावट में लिखा था, 'अभी शाम के आठ बजे हैं। फिलहाल मैं ग्रीक बिल्कुल नहीं जानता। लेकिन अब मैं इरविंग ने संकल्प लिया है कि सुबह आठ बजे तक मैं ग्रीक वर्णमाला और अक्षरों को पढ़ना और लिखना सीख लूँगा।'

शब्दकोष पलटा। इसके आखिरी पन्ने पर एक और नोट था। इस पर इरविंग ने अपने हस्ताक्षर में लिखा, 'सुबह के आठ बजे हैं और मैं इरविंग बताता हूँ कि मैंने ग्रीक भाषा अच्छी तरह से सीख ली है। मैंने कल रात जो संकल्प लिया था, उसे पूरा कर रहा हूँ।'

क्या यह एक काल्पनिक घटना है ? यह अविश्वसनीय है। लेकिन यह एक सच्ची कहानी है। इरविंग के जीवन में ऐसी कई घटनाएँ हैं। इसलिए उनका जीवन अनेक संकल्प साधनाओं से भरा हुआ है। अब आप ही बताएँ कि अखंड तप जैसी निरंतर तपस्या करने वाला व्यक्ति ऐसा कर सकता है या नहीं ? जहाँ ऐसे दृढ़ निश्चयी पुरुष होते हैं, वहाँ कुछ भी शेष नहीं रहता।

मनुष्य स्वयं यह नहीं जानता। और यदि आप नहीं जानते हैं, तो आप इसे कभी साबित नहीं करेंगे। अगर कोई उसे यह बताने की कोशिश भी करता है तो वह मुँह फेर लेता है। मन में उगे संकल्पों के जंगल को काटने और उसकी लकड़ियाँ जलाने का कार्य मनुष्य स्वयं करता है। एक बार मनुष्य अपने अंदर कल्पना के बगीचे के फूलों को पहचान ले तो पूरा जीवन सुगंधित हो जाता है।

संकल्प जितना मजबूत होगा, वह उतनी ही तेजी से पूरा होगा। यदि आप रक्त की एक बूंद को प्रवाहित करते हुए कोई संकल्प लेते हैं और उसे पूरा करने के लिए जी-जान से जुट जाते हैं, तो वर्षों का काम निश्चित ही दिनों में पूरा हो जाता है।

महापुरुष संकल्प करते हैं और सामान्य लोग कामना करते हैं।

सीख : मनुष्य की इच्छाशक्ति में बहुत ताकत होती है।

29. जीने का जूनून

एक बार एक डॉक्टरने एक बीमार मरीज से कहा, 'भाई, तुम्हारे शरीर में कुछ भी नहीं बचा है। तुम एक महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकते।' मरीज ने कहा, 'साहब, लेकिन मैं जीना चाहता हूँ। मैं मरना नहीं चाहता। इस दुनिया में मुझे अभी भी बहुत काम करना है।' डॉक्टरने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'भाई, तुम्हारा जुनून ठीक है। लेकिन तुम जीवित नहीं रह सकते।'

मरीज चुपचाप चला गया। पच्चीस साल बाद मरीज डॉक्टर से मिला। डॉक्टर उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गया। कुछ बोल न सका। वह उसके सामने खड़ा था। आख़िरकार मरीज़ ने खुद ही कहा, 'साहब, चौंकिए मत। आप बिल्कुल भी गलत नहीं थे। मेरा शरीर थक गया था। उस शरीर में जीने का संकल्प हिलोरें ले रहा था, इसलिए मैं जीवित रहा। यह केवल मेरा संकल्प है जो मेरे शरीर को कायम रखता है।'

संकल्प जीवनदाता है। अगर ठान लिया जाए तो साँसें नहीं रुकती। संकल्प मनुष्य के दिल की धड़कन भी हो सकता है और साँस भी। इसलिए संकल्प को हमेशा अपने दिल से जोड़े रखें।

जो लोग 'असंभव' को अपने पैरों के नीचे रखते हैं,उनके लिए दुनिया में कुछ भी 'असंभव' नहीं है। उनकी इच्छाशक्ति पूरी दुनिया को उनके कदमों में ला देती है।

महाराणा प्रताप, नेपोलियन, सिद्धराज जयसिंह, वीर सावरकर, महात्मा गांधी और छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे कई महापुरुष हुए है, जिन्होंने दृढ़ संकल्प के बल पर विजय प्राप्त की है। एक समय पूरा देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया जिन चीजों को असंभव मानती थीं, उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति को मजबूत करके उन सभी चीजों को अपने पैरों तले जीत लिया।

जब बाकी लोग बैठे थे तो ये लोग भाग रहे थे और जब बाकी लोग दौड़ रहे थे तो ये लोग चुपचाप बैठे हुए थे। ये लोग जानते थे कि दृढ़ इच्छाशक्ति ही सच्ची बुद्धिमत्ता है। इसके प्रयोग से उन्होंने सारा संसार प्राप्त कर लिया, संसार का कल्याण किया और संसार के प्रिय बन गये।

सीख : संकल्प के बिना मानव निर्माण संभव नहीं है। मनुष्य पहले संकल्प करता है, फिर उसे पूरा करने का प्रयास करता है। और फिर अपने संकल्प की सिद्धि से ही उसका निर्माण होता है।

अभी शाम के आठ बजे हैं। फिलहाल मैं ग्रीक बिल्कुल नहीं जानता। लेकिन अब मैं 'इरविंग' ने संकल्प लिया है कि सुबह आठ बजे तक मैं ग्रीक वर्णमाला और अक्षरों को पढ़ना और लिखना सीख लूँगा।

GREEK AND ENGLISH
DICTIONARY.
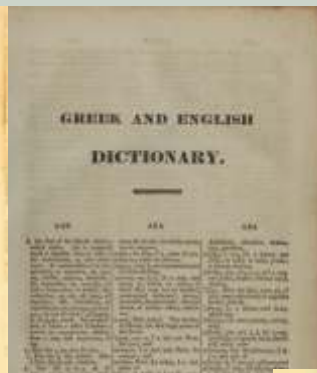
सुबह के आठ बजे हैं और मैं 'इरविंग' बताता हूँ कि मैंने ग्रीक भाषा अच्छी तरह से सीख ली है। मैंने कल रात जो संकल्प लिया था, उसे पूरा कर रहा हूँ।

Supported By

- M. M. Exports - Mandavala - Chennai
- Sanghvi Manoribai Kavarlalji Baid
  Saral - Parasmani - Manish - Dipak - Vishal - Chennai
- Vimalaben Hirjibhai Shah - Santacruz (W), Mumbai
  Samir - Rita, Jayesh - Talat
- Bipinbhai kantibhai Chhaganlal Sheth Parivar - Chennai
- Pravinbhai Mafatlal Mehta Parivar
  Avantikaben, Pinky, Priti, Jatin - Chennai
- Ek Sadgrihastha - Haste : Mallika Nirmal CA, Vellore, T.N.
- Bharuch Jain Maha Sangh - Vikeshbhai - Bharuch
- Swami Sandip Jayantibhai Rathod Parivar
  Sangitaben, Leona - Vidyanagar, Anand (Gujarat)
- Jatin, Saurin, Twinkle, Kunj, Shonit, Jeeyan, Shayaan
  Manglaben Subhashbhai Shah - Savoy, Santacruz, Mumbai
- Dharit Shalinbhai Shah - Smt. Devanshi Shalinbhai Shah
  Suhasbhai Shah - Smt. Kajalben Suhasbhai Shah
  Haste : Shri Suhasbhai Leharchandbhai Shah
- Vinaben Rasiklal Gandhi - Harshi - Mishka - Kiah
  Niryan - Arham - Pannaben Sandipbhai Parikh
  Sehul - Rakhi, Anish - Reshma, Vishal - Saloni Parivar
  Palanpur (BK) - Mumbai - Dubai
- Smt. Pushpaben Rameshji Sakaria (Sanderao) Hubli, Karnataka
- Ek Sadgrihasth - Haste : Parag Janakbhai - Secundrabad
- Gautam S. Devraj Jain - Chennai
- Sushilaben Hamirmalji Solanki - T Nagar, Chennai
- Sudhaben Arvindbhai Shah - Amit - Dipti, Mayank - Devangi
  Mayankbhai - Naranpura, Ahmedabad
- Shrikant Lalitkumar Mehta
  Utsavi, Minal, Bhavik, Dhrishya, Dhara, Abhishek - Cuttack
- Matushri Panbai Kalyanji Virji Savla
  Haste : Chandubhai Savla - Dadar (Mumbai) - Manfara (kuchchh)
- Dineshbhai S Shah - Devyaniben D Shah, Parag D Shah - Minal P Shah
  Nakul P Shah - Vaishnavi N Shah, Aashini P Shah
- Prashant Singhvi, Hydrabad
  Vikram Bhandari, Hydrabad
- Santosh Tated - Erode, Tamilnadu
  Hina Bhavin Dalal, Hinal, Jetal - Borivali, Mumbai
- In Memory of Sanat Dada and Most loveable Mom Shakuntala

By Kiaan Anuja Shah

मातृहृदया सरलस्वभावी पूज्य साध्वीवर्या
श्री सर्वोदयाश्रीजी म. सा.
(पू. माँ म.सा.)

परम विदुषी-एकादशांगपाठी पूज्य साध्वीवर्या
श्री रत्नचूलाश्रीजी म. सा.

शासन प्रभाविका-प्रकृष्ट पुण्यनिधि पूज्य
साध्वीवर्या श्री वाचंयमाश्रीजी म. सा.
(पू. बेन म.सा.)

मधुरभाषी-पल्लिवाल प्रदेशोद्धारिका पूज्य साध्वीवर्या
श्री शुभोदयाश्रीजी म. सा.

Left to Right

Rhushabh Rajendra Kamdar - Sejal Rhushabh Kamdar

Dilip Shantilal Kamdar - Namrata Dilip Kamdar

Vihaan Shreyans Kamdar - Geeta Shreyans Kamdar

Rajendra Shantilal Kamdar - Sarala Rajendra Kamdar

Kavya Rhushabh Kamdar, Ridhan Rhushabh Kamdar,

Shreyans Rajendra Kamdar, Dithvi Vipin Vairagade

Purvi Vipin Vairagade, Vipin Ram Vairagade

NAGPUR (MAHA.)